॥ श्रीः ॥

शुक्ल यजुर्वेदीय माध्यन्दिन वाजसनेयिनाम्

सन्ध्योपासन विधिः

संशोधकः

श्री लक्ष्मीनारायण गोस्वामी

श्री विद्याधर्म्मवर्द्धिनी पाठशाला (संस्कृत कालेज) याः
यजुर्वेद कर्म-काण्डाध्यापकः ।

केवल टाइटिल-पेज गंगा प्रेस, बेलनगंज-आगरा में मुद्रित ।

भूमिका

सन्ध्या दिन का अवसान-रात्रि के आगमन को कहते हैं। यह सन्ध्या ही धार्मिकता की जड़ है। ब्राह्मणों के काम में सबसे पहिला काम सन्ध्या करना ही है आर्ष ग्रन्थों में यहां तक लिखा है—

विप्रोवृक्षस्तस्य मूलञ्च सन्ध्या वेदाः शाखा धर्मकर्माणि पत्रम्।
तस्मान्मूलं यत्न तो रक्षणीयं छिन्ने मूले नैव शाखा न पत्रम्॥

केवल ब्राह्मण ही नहीं; वरन द्विजाति मात्र को सन्ध्या करना आवश्यक है। फिर सन्ध्या वही कर सकता है जिसका विधि पूर्वक यज्ञोपवीत-संस्कार हो गया हो, ऐसे लोगों को तीनों सन्ध्या करनी चाहिये। किस तरह सन्ध्या करनी चाहिये? इसकी विधि इस छोटी सी पुस्तक में बतलाई गई है। यों तो आजकल सन्ध्या की बहुतेरी पुस्तकें बाजार में दिखलाई देती हैं; किन्तु उनमें से कोई भी उपयुक्त नहीं मालूम होती।

इसलिये ऐसी पुस्तक का अभाव देख, मैंने सर्व साधारण के लाभार्थ एक सम्पूर्ण सन्ध्या-विधि प्रकाशित कराई है। इसमें शुद्ध और सरल भाषा में आरम्भ से अन्त तक यज्ञोपवीत धारण करने के मन्त्र; यज्ञोपवीत त्याग करने के मन्त्र, आचमन के मन्त्र, वायु के आवाहन करने का मन्त्र तथा सन्ध्या में प्रयोग होने वाले सभी तरह के मन्त्र लिख दिये हैं। मैंने चेष्टा की है कि सन्ध्या करने वाले साधुजनों को किसी तरह विधि आदि के अभाव का कष्ट न उठाना पड़े। इस कारण सर्व साधारण के हितार्थ यह पुस्तक बिना मूल्य वितरण कराने का प्रबंध किया है। और नित्य काम में आने वाले छोटे छोटे मन्त्र न्यास ध्यान सहित और १५ के यन्त्र की सविस्तार विधी तीर्थ श्राद्ध आदि परमोपयोगी विषय बढ़ाकर जोड़ दिये हैं। अतः सम्पूर्ण सज्जनों से मेरा सानुनय अनुरोध है कि इस पुस्तक को ग्रहण कर मेरे परिश्रम को सफल करेंगे। कृपया अपना पता साफ़ लिखें॥ इतिशम्॥

बैजनाथ भगत, नवलगढ़ निवासी

❀ श्रीः ❀

शुक्ल यजुर्वेदीय माध्यन्दिन वाजसनेयिनाम्

सन्ध्योपासन विधिः

कात्यायनीय तर्पण तथा विविधोपयोगी विषयो पेता

(भाषा टीका समेता)

पं० बिहारीलाल मिश्र आयुर्वेदाचार्येण

संग्रहीतस्तथा

आगरा नगरस्थ श्री विद्याधर्म्म-वर्द्धिनी पाठशालायाः

कर्म्म-कांड युजुर्वेदाध्यापकेन,

विद्याभूषण, कर्म्म-काण्ड मणि, उपाधि धारिणा

अयोध्यास्थ पण्डित परिषद् समितेः कर्म्मकांड विषय परीक्षकेन

श्री लक्ष्मीनारायण गोस्वामिना

पुनः संशोधिता परिवर्धिता तथा श्रीघनश्याम गोस्वामिना

सम्पादिता सा च

वंशीधर दुर्गादत्त फर्माध्यक्ष

बैजनाथ ब्रजकिशोर भक्ताभ्यां

(नवलगढ़ निवासिभ्यां)

सहाय्येन

शङ्कर यन्त्रालये आगरा पत्तने मुद्रयित्वा

प्रकाशिता च

संवत् १९९७ सन् १९४० ई०

प्राप्ति स्थानम्—

वंशीधर प्रेमसुखदास तैल मिल, माईथान, आगरा ।

पंचमवार १००००] क्रमागत संख्या ४५००० [बिना मूल्य

प्रात: कृत्यम् ॥

अपने हाथ मल कर देखना
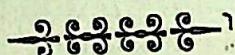
करांग्रे वसते लक्ष्मी कर मध्ये सरस्वती।
करमूले स्थितो ब्रह्मा प्रभाते करदर्शनम् ॥

गणेश स्तुति: ॥

प्रात: स्मरामि गणनाथमनाथबन्धुं सिन्दूर पूर्णपरिशोभितगण्डयुग्मम् ॥ उद्दंड विघ्नपरि खण्डन चण्ड दण्डमाखण्डलादि सुरनायकवृन्द वन्द्यम् ॥१॥ प्रातर्नमामि चतुराननवन्द्यमान- मिच्छानुकूलमखिलं च वरं दधानम् ॥ तंतुन्दिलं द्विरसनाधिपयज्ञसूत्रं पुत्रंविलास चतुरं शिवयो: शिवाय॥२॥ प्रातर्भजाम्यभयदं खलु भक्त शोक दावानलं गण विभुं वरकुंजरास्यम्। अज्ञानका- नन विनाशन हव्यवाहमुत्साहवर्धनमहं सुतमी-

श्वरस्य॥३॥श्लोकत्रय मिदं पुण्यंसदासाम्राज्य दायकम्। प्रातरुत्थायसततं यःपठेत्प्रयतः पुमान्

नारायण स्तुतिः॥

प्रातः स्मरामि भवभीति महार्तिशान्त्यै नारायणं गरुडवाहन मब्जनाभम्। ग्राहाभिभूत वर वारण मुक्तिहेतुं चक्रायुधं तरुणवारिजपत्र-नेत्रम्॥१॥प्रातर्नमामिमनसावचसा च मूर्ध्ना पादारविंद युगलं परमस्य पुंसः। नारायणस्य नरकार्णवतारणस्य पारायण प्रवण विप्रपराय-णस्य।२।प्रातर्भजामि भजतामभयंकरंतंप्राक्सर्व जन्म कृतपाप भयापनु (ह)त्यै यो ग्राहवक्त्रपति-तांघ्रि गजेन्द्र घोर शोक प्रणाशन करोधृत शंख चक्रः।३।श्लोकत्रयमिदं पुण्यंप्रातःकालेपठेन्नरः लोकत्रय गुरुस्तस्मैदद्यादात्मपदं हरिः॥

जानामिधर्मं नच मे प्रवृत्तिःजानाम्यधर्मंन च मे निवृत्तिः॥ केनापिदेवेन हृदिस्थितेन यथा नियुक्तोस्मि तथा करोमि॥

पृथ्वी प्रार्थना

ॐ समुद्रमेखले देवि पर्वतस्तनमंडले । विष्णु पत्नि नमस्तुभ्य पादस्पर्शं क्षमस्व मे ॥

अथ यज्ञोपवीत धारण प्रयोगः

आचम्य । प्राणानायम्य देशकालौ संकीर्त्य श्रौतस्मार्त कर्म्मानुष्ठानसिध्यर्थं यज्ञोपवीत धारणमहं करिष्ये ।

जल से यज्ञोपवीत धोने के लिए विनियोग सहित मंत्र यह है:—

ॐ आपोहिष्ठेत्यादि त्र्यृचस्य सिंधुद्वीप ऋषिः आपो देवता गायत्री छंदः यज्ञोपवीत-प्रक्षालने विनियोगः ।

अथ मंत्रः ।

ॐ आपोहिष्ठामयो भुवः॥ॐ तानऽऊर्जे दधा-तन ॥ ॐमहेरणाय चक्षसे ॥ ॐ योवः शिवत-मोरसः ॥ॐ तस्यभाजयते हनः॥ ॐउशतीरिव मातरः॥ॐतस्माऽअरंगमामवः॥ॐयस्यक्षयाय जिन्वथ ॥ॐ आपो जनयथा च नः ॥

इसके बाद १० गायत्री मन्त्र से यज्ञोपवीत को अभिमंत्रित कर देवता का ध्यान करके विनियोग सहित मन्त्र बोलकर यज्ञोपवीत धारण करना ।

यज्ञोपवीत ध्यानम्

ॐ प्रजापतेर्यत्सहजं पवित्रं कार्पाससूत्रोद्भवब्रह्म-सूत्रं। ब्रह्मत्वसिध्यै च यशः प्रकाशं जपस्य सिद्धिं कुरु ब्रह्मसूत्रम् ॥

अब नीचे लिखे मन्त्र से एक एक यज्ञोपवीत धारण करे ॥

विनियोगः ॥

ॐ यज्ञोपवीतमितिमंत्रस्य परमेष्ठी ऋषिर्लिंगोक्ता देवतास्त्रिष्टुप्छंदः यज्ञोपवीतधारणे विनियोगः॥

यज्ञोपवीत इस मंत्र से धारण करे।

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्। आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञो-पवीतं बलमस्तु तेजः॥ ॐ यज्ञोपवीतमसि-यज्ञस्यत्वायज्ञोपवीतेनोपनह्यामि ॥

हे यज्ञोपवीत ! तुम बड़े ही पवित्र हो और सृष्टि के आदि में ब्रह्मा के साथ पैदा हुए हो। इसलिए सुख के साथ २ तुम मुझे अधिक उम्र दो और साथ ही तुम्हारे धारण करने से मेरे शरीर में बल और तेज बढ़े।

इस मन्त्र से पुराना यज्ञोपवीत त्याग करना ॥

एतावद्दिनपर्यन्तं ब्रह्मत्वं धारितंमया। जीर्णत्वा-त्वत्परित्यागो गच्छ सूत्र यथा सुखम् ॥

हे यज्ञोपवीत ! इतने दिनों तक धारण करने से ब्रह्मत्व प्राप्त किया अब पुराने होने के कारण मैं तुमको त्यागता हूँ इसलिए सहर्ष तुम अपने स्थान को जाओ।

शिर मार्ग से निकाल भूमि में रखे पश्चात् १० बार गायत्री जप करना ॥ इति यज्ञोपवीत धारणविधिः ॥

॥ सन्ध्या माहात्म्य ॥

विप्रो वृक्षस्तस्य मूलञ्च सन्ध्या,
वेदाः शाखाः धर्मकर्माणि पत्रम् ।
तस्मान्मूलं यत्नतो रक्षणीयं,
छिन्ने मूले नैव पत्रं न शाखाः ॥

अर्थ—विप्र रूपी वृक्ष का मूल संध्या और डालियाँ चार वेद हैं तथा धर्म, कर्म, आदि उस वृक्ष के पत्ते हैं। मूल (संध्या) की बड़े यत्न से रक्षा करनी चाहिये क्योंकि मूल (जड़) के नष्ट हो जाने से न फिर पत्ते रहते हैं न डाली, इससे जो मनुष्य अपने ब्राह्मणत्व की रक्षा चाहे वह अवश्य ब्राह्मण रूपी वृक्ष की जड़ जो संध्या है, उसकी रक्षा करे अर्थात् विधि मालूम कर भली भाँति संध्या की उपासना नित्यप्रति किया करे। संध्या नहीं करने वालों को व्यास जी ने (व्यास स्मृति में) क्या लिखा है देखियेगा:—

सन्ध्या येन न विज्ञाता सन्ध्या येनानुपासिता ।
जीवन्द्विजो भवेच्छूद्रो मृतः श्वा चैव जायते ॥

तस्मान्नित्यं प्रकर्तव्यं संध्योपासनमुत्तमम् ।
तदभावेऽन्यकर्मादावधिकारी भवेन्नहि ॥

अर्थ—जो ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य, संध्या को नहीं जानता, जो संध्या की उपासना नहीं करता वह जीता हुआ शूद्र के तुल्य है और मरने पर कुत्ता होता है। इसीलिये उत्तम सन्ध्योपासन कर्म को नित्य करना। इसके बिना किये और कामों के करने का अधिकार नहीं होता (द्विजाति) मनुष्य को संध्या नहीं करने पर मनुजी क्या लिखते हैं:

नानुतिष्ठति यः पूर्वां नोपास्ते यश्च पश्चिमाम्।
स शूद्रवद्बहिष्कार्यः सर्वस्माद् द्विजकर्मणः ॥

अर्थ—मनुजी महाराज ने तो जो मनुष्य प्रातः और सायं संध्या की उपासना नहीं करता उसे ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य के योग्य कामों से जैसे शूद्र को निकाल देते हैं वैसे द्विजों को सब कामों से अलग कर देने को लिखा है।

इसलिये द्विजाति मात्र को संध्या अवश्य जानना और नियम पूर्वक करना चाहिए।

संध्या नित्य कर्म है, जो कभी छोड़ा नहीं जाता। यदि जनन सूतक अथवा मरण सूतक हो तब भी संध्या अवश्य करें। निर्णय सिन्धुकार ने पञ्चम परिच्छेद में कई ऋषियों के मत को लिख कर यह निश्चय किया है कि सूतक में संध्या करना और न करना दोनों प्रकार के ऋषि वाक्य मिलते हैं। इनका निचोड़ यही है कि पूरी २ संध्या न करे। कुछ कम करे संध्या की नागा

न करे इसी के स्पष्ट करने के लिये "प्रयोग पारिजात" ग्रन्थ में भारद्वाज ऋषि के बचनों को लिखा है, जैसे:

सूतके मृतके कुर्यात् प्राणायाममन्त्रकम् ।
तथा मार्जनमन्त्रांस्तु मनसोच्चार्यमार्जयेत् ॥
गायत्री सम्यगुच्चार्य सूर्यायार्घ्यं निवेदयेत् ।
मार्जनन्तु न वा कुर्यादुपस्थानं न चैव होति ॥

अर्थ—सन्तान होने के सूतक या किसी के मरने का सूतक हो तो उसमें भी पुरुष मन्त्र के बिना प्राणायाम करे मार्जन के मन्त्रों को मन से उच्चारण करता हुआ मार्जन करे। गायत्री को भलीभाँति उच्चारण कर सूर्य को अर्घ्य देवे तथा चाहे तो मार्जन न भी करे। पर उपस्थान तो सर्वथा न करना चाहिए।

प्रणवस्य ऋषिर्ब्रह्मा गायत्रीच्छन्द एव च ।
देवोऽग्निः सर्वकार्य्येषु विनियोगः प्रकीर्तितः ॥

अर्थ—ॐकार के ब्रह्मा ऋषि, गायत्री छन्द और अग्नि देवता हैं इसका सब काम में विनियोग अर्थात् जो इसको उच्चारण करके तब धार्मिक कार्यों का प्रारम्भ करना।

ॐकारं पूर्वमुच्चार्य भूर्भुवः स्वस्ततः परम् ।
गायत्री प्रणवश्चान्ते जपेद्येवमुदाहृतम् ॥

अर्थ—जप करने में पहिले ओंकार उसके उपरांत भूर्भुवः स्वः तब गायत्री और अन्त में भी ओंकार जोड़ना ऐसा कहा गया है। गायत्री जप में तीन व एक ओंकार लगाना याज्ञवल्क्य और मनुजी की आज्ञा में नहीं है।

अथ सन्ध्याविधिः प्रारभ्यते

संध्या करने की रीति यह है कि स्नान करके सूखा वस्त्र पहिन कर दुपट्टा ओढ़ और अँगोछा लिये हुए आसन पर बैठ पूर्व की ओर मुँह कर आचमन करके अँगूठे की जड़ से दो बार ओठों को पोंछ फिर माथे, गले, बाँह, और हृदय में भस्म लगाना ॥ भस्म लगाने के मन्त्र यह हैं—

ॐ त्र्यायुषञ्जमदग्नेः ॥ इससे माथे में।

ॐ कश्यपस्यत्र्यायुषम् ॥ गले में।

ॐ यद्देवेषुत्र्यायुषम् ॥ सीधे कंधे में।

ॐ तन्नोऽअस्तुत्र्यायुषम् । छाती और बांईं बाँह में।

शरीर और आत्मा को पवित्र करने के लिए यह मन्त्र पढ़ कुशा से अपने ऊपर पानी छिड़के।

ॐ अपवित्रः पवित्रोवा सर्वावस्थाङ्गतोपिवा ॥
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं सवाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥

॥ विनियोगः ॥

ॐ पृथ्वीति मंत्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिःसुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसने विनियोगः ॥

॥ अथ पृथ्वी प्रार्थना का मन्त्रः ॥

ॐ पृथ्वित्वया धृतालोकादेवि त्वं विष्णुनाधृता ।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥

॥ अर्थ ॥

हे पृथ्वी ! तुमने लोकों को धारण किया, और विष्णु ने तुमको धारण किया, इसलिए हे देवि ! तुम मुझको धारण कर मेरे आसन को पवित्र करो ।

संकल्पः—

ॐ तत्सत् श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णो-राज्ञया प्रवर्तमानस्यअद्य ब्रह्मणो द्वितीय परार्द्धे श्री श्वेत वाराह कल्पे जम्बू द्वीपे भरतखंडे राम-राज्ये आर्यावर्तैकदेशांतर्गते वैवस्वत मन्वंतरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलि प्रथम चरणे महानद्यागोदावर्यादक्षिणे तीरे अमुक नाम संवत्सरे[१] अमुक शके[२] अमुकायने[३] अमुकगोले[४] अमुकर्त्तौ[५] मासानामुत्तमे महा-मांगल्यप्रद अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुक वासरे अमुक नक्षत्रे योगे करणे लग्ने मुहूर्ता न्विताया ममुकाऽमुक राशिवेलाया-मेवं गुण विशिष्टायां पुण्यतिथौ अमुक गोत्रो

---

(१) संवत् का नाम और (२) शके की संख्या पंचांग में लिखी होती हैं । (३) मकर की संक्रांति से उत्तरायण कर्क से दक्षिणायन कहना ।

ऽमुकनाम शर्म्माहं ममोपात्तदुरित क्षय द्वारा श्रीपरमेश्वर प्रीत्यर्थं प्रातः सन्ध्योपासन कर्माहं करिष्ये ।

(बायेंहाथ में तीन कुशा की पवित्री, और दो कुशा की पवित्री दाहिने हाथ में पहिन, तथा थोड़ी कुशा की मार्जनी वाम हाथ में रख ओंकार सहित गायत्री मन्त्र पढ़के चुटिया बाँधना, ईशान कोण की ओर मुँह कर तीन बार आचमन करना, आचमन के तीन मन्त्र ये हैं—

(१)ॐ केशवाय नमः । (२)ॐ नारायणाय नमः । (३)ॐ माधवाय नमः । और (४) ॐ हृषीकेशाय नमः ।

इस चौथे मन्त्र को उच्चारण कर हाथ धोना तथा कान, नासिका, मुख आदि ऊपर के अंगों को जल से स्पर्श करके तब हाथ में जल ले ऋतञ्च ० इस मन्त्र से पवित्र करके तीन बार आचमन करे । इसका मन्त्र यह है—

ॐ ऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत । ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रोऽअर्णवः ।

---

(४) मेष संक्रांति से उत्तर गोल तुला से दक्षिण गोल होता है । (५) दो २ महीने की एक ऋतु चैत्र से—बसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद्, हेमन्त, शिशिर होती हैं ।

समुद्रादर्णवा दधि संवत्सरोऽअजायत ।
अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी ।
सूर्या चन्द्रमसौ धाता यथा पूर्व्वमकल्पयत् ।
दिवञ्च पृथिवीं चांतरिक्ष मथोस्व : ॥

अर्थ —महाप्रलय के समय केवल (ऋत और सत्य नाम) परब्रह्म रहे, उसके अनन्तर महाप्रलय के समय में रात्रि हुई अर्थात् सब अन्धकार मय था इसके बाद अर्थात् सृष्टि के आरम्भ में प्रकाशमान तप रूप दैव के बल से जलमय समुद्र प्राप्त हुआ और उस जलमय समुद्र में अप्रगट रूप अर्थात् महाप्रलय में लुप्त हुए इस विश्व को रचने में समर्थ "धाता" अर्थात् ब्रह्मा जी उत्पन्न हुए उन्होंने दिन रात के करने वाले सूर्य और चन्द्रमा को पहिली सृष्टि के अनुसार रचा, तिसके बाद संवत्सर अर्थात् समय का विभाग हुआ इसके उपरान्त देवलोक, पृथ्वीलोक, अन्तरिक्षलोक, और स्वर्गलोक, आदि की कल्पना की गई। अब गायत्री से रक्षा करना सीधे हाथ में जल लेकर बाँये हाथ से ढके, और "ओंकार सहित गायत्री" पढ़कर तब अपने चारों ओर जल से रक्षा करे, बाद में प्राणायाम के लिए ऋषि देवता आदि को स्मरण करे।

विनियोगः। यथा—

ओंकारस्य ब्रह्माऋषिर्गायत्री छंदोग्निर्देवता शुक्लो वर्णःसर्वकर्मारम्भे विनियोगः। ॐ सप्त

व्याहृतीनां प्रजापतिर्ऋषिर्गा यत्र्युष्णिगनु-
ष्टुब्बृहती पंक्तिस्त्रिष्टुब् जगत्यश्चछन्दांस्यग्नि
वाय्वादित्य बृहस्पति वरुणेन्द्र विश्वेदेवा देवता
अनादिष्टप्रायश्चित्ते प्राणायामे विनियोगः ॥
ओंगायत्र्याविश्वामित्रऋषिर्गायत्रीछन्दःसविता
देवताग्निमुखमुप नयने प्राणायामेविनियोगः ॥
ओंशिरसःप्रजापतिर्ऋषिस्त्रिपदा गायत्रीछन्दो
ब्रह्माग्निवायुसूर्या देवताः प्राणायामेविनियोगः

भाषा —इस प्रकार ऋषि और देवता आदि का स्मरण कर आसन बांध आंखें मूंद मौन हो मन्त्र के अर्थ का ध्यान करता हुआ नासिका के दाहिने छिद्र को अँगूठे से मूंद चतुर्भुज श्यामसुन्दर भगवान को अपने नाभि कमल में ध्यान करता हुआ तीन वा एक बार मनमें आगे लिखे मंत्र को पढ़े, उतनी देर तक नासिका के बांये छिद्र से धीरे धीरे श्वास खींचता रहै,

---

१ॐ सप्त व्याहृतीनां विश्वामित्र जमदग्निभरद्वाज गौतमात्रि वसिष्ठ कश्यपा ऋषयः। गायत्र्युष्णिगनुष्टुब्बृहती पंक्तित्रिष्टुब जगत्यश्छन्दांस्यग्निवाय्वादित्य बृहस्पति वरुणेन्द्रविश्वेदेवा देवता अनादिष्टप्रायश्चित्ते प्राणायामे विनियोगः कहीं कहीं ऐसा भी पाठ है।

इस को पूरक नाम प्राणायाम कहते हैं, उपरान्त श्वास को अपने हृदय में रोक अपने ही हृदय में कमल पर बैठे हुए, रक्तवर्ण ब्रह्माजी का ध्यान करता हुआ ३ या एक बार उसी मन्त्र को पढ़े, इसको कुंभक प्राणायाम कहते हैं, बाद में अपने माथे में श्वेतवर्ण त्रिनेत्र शिवजी का ध्यान करता हुआ उसी मन्त्र को तीन वा १ बार पढ़ता रहे और जितने समय में मन्त्र पढ़े उतने काल तक नासिका के दाहिने छिद्र से श्वास को धीरे २ छोड़ता रहे। इसको रेचक प्राणायाम कहते हैं, यह एक प्राणायाम हुआ इसी प्रकार लोम विलोम रीति से ३ प्राणायाम करना।

प्राणायाम का मन्त्र यह है:—

ॐ भूः, ॐ भुवः, ॐ स्वः, ॐ महः, ॐ जनः ॐ तपः, ॐ सत्यं, ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनःप्रचोदयात् ॐ आपो ज्योतिरसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम् ॥

प्राणायाम तथा पद्मासन की विधि —सीधे पैर को बाँई जँघा पर और बांये पैर को सीधी जँघा पर रखना मेरुदंड (पीठ की हड्डी) को सीधा कर ठोड़ी को आगे से कुछ झुका कर बैठना, (यह गुरुद्वारा जानना)।

अर्थ—जो सविता देवता धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष विषय वाली बुद्धि को श्रेष्ठ कामों में प्रेरणा करे उस जगत के उत्पन्न करने वाले प्रकाशमान सूर्यनारायण के भजन करने योग्य अर्थात् पूजने योग्य भूर्लोक, भुवर्लोक, स्वर्लोक, महर्लोक,

जनलोक तपलोक और सत्यलोक के प्रकाश करने वाले जलरूप, प्रकाशरूप, आनन्द रूप, मोक्ष रूप, ब्रह्मरूप और "भूर्भुवःस्वः" स्वरूप ओंकाररूप सृष्टि स्थिति प्रलयकारक भर्ग अर्थात् तेज को ध्यान करते हैं।

इसके उपरान्त नीचे लिखे 'सूर्यश्च" इस मन्त्र को विनियोग सहित पढ़के तीन आचमन करे ॥ विनियोगः ॥

ॐसूर्य्यश्चमेति ब्रह्मऋषिः प्रकृतिश्छन्दः सूर्य्यो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः ।

॥अथ मन्त्रः

ॐसूर्य्यश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः पपेभ्यो रक्षन्ताम् । यद्रात्र्या पापमकार्षं मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना रात्रिस्तदवलुम्पतु यत्किञ्चिद्-दुरितं मयिइद-महममृत योनौ सूर्य्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा

अर्थ—सूर्य्यनारायण क्रोधाभिमानी देवता और यज्ञ के पति ब्रह्मा, विष्णु, रुद्रादि देवता यज्ञ विषयक व क्रोध से किये गये पापों से मेरी रक्षा करें अर्थात् पूजा का अपराध मुझसे न होवे, न मुझे ऐसा क्रोध होवे जिससे कोई पाप बन पड़े। मैंने रात में पराये द्रोह की चिन्ता से, दूसरे की चिन्ता आदि से मारने से चींटी आदि के कुचल जाने, न खाने योग्य अन्न आदि के खाने और अयोग्य समय में स्त्री का संग करने से जो पाप किया हो

उन पापों को रात्रि काल में भगवान् नाश करें। और जो कुछ मेरे में दुरित (पाप) हों मैं उन्हें अविनाशी, हृदय कमल में स्थित प्रकाशरूप सूर्य में होम करता हूँ उसी में अच्छी भांति भस्म हो जांयअर्थात् वह पाप नष्ट हो जांय और फिर मुझसे न बन पड़ें।

उपरान्त 'आपोहिष्ठेत्यादि इस मन्त्र के नव भागों में से सात को पढ़ कर सिर पर, आठवें से पृथ्वी पर और फिर नवें से सिर पर जल छिड़के। विनियोग सहित मंत्र आगे लिखे हैं—

ॐ आपोहिष्ठेत्यादि त्र्यृचस्य सिन्धुद्वीपऋषि-गायत्रीछन्द आपो देवता मार्जने विनियोगः।

॥ अथ मंत्रः ॥

१ ॐ आपोहिष्ठामयो भुवः। २ ॐ तानऊर्जे दधातनः। ३ ॐ महेरणाय चक्षसे। ४ ॐ योवःशिवतमो रसः। ५ ॐ तस्य भाजयतेहनः ६ ॐ उशतीरिव मातरः। ७ ॐ तस्माऽअरङ्गमामवः। ८ ॐ यस्य क्षयाय जिन्वथ। ९ ॐ आपो जनयथा च नः।

अर्थ —हे जल! जिससे कि आप सुख देने वाले हो इस कारण मुझे बलकारक अन्न के देने वाले और लोक या परलोक में महारमणीयता के दर्शन कराओ। अर्थात् जिस प्रकार से मैं अधिक बलयुक्त अग्नि वाला हो कर उत्तम गरिष्ट भोज्य के भोजन करने वाला होऊँ और विधि में लिखे स्नानादि कर्मों के

करने में और ब्रह्म-साक्षात्कार में समर्थ हो सकूं वैसा करो।

अर्थ—हे जल! पुत्र सुख के चाहने वाली माता के समान जो आप हैं सो तुम्हारा वह अत्यन्त कल्याणरूप रस है इस लोक में उस रस के भोक्ता मुझे भी करो अर्थात् पुत्र स्नेह वाली माता जैसे लड़के को दुग्धादि द्वारा कल्याणयुक्त करती है वैसे ही तुम भी कल्याणरूप अपने रस से मुझको तृप्त करो।

जिस जगत के आधारभूत रस के एक अंश से ब्रह्मा से लेकर स्तम्भ (कुशा) पर्यंत जगत् को आप तृप्त करते हो तुम्हारे उस रस से मैं तृप्त होऊं और हे जल! आप मुझको प्रजा के उत्पन्न करने में अथवा उस जल के अमृतरस के भोग करने में समर्थ करो तब हाथ में जल लेकर तीन बार "द्रुपदादिव" इत्यादि मन्त्र को पढ़ उस जल को माथे में लगावे। विनियोग सहित मन्त्र यह है—

ॐ द्रुपदादिवेति कोकिलो राजपुत्र ऋषिरनुष्टुप्छन्द आपो देवता सौत्रामण्यवभृथे विनियोगः

ॐ द्रुपदादिव मुमुचानः स्विन्नः स्नातो मलादिव पूतं पवित्रेणेवाज्यमापः शुन्धन्तु मैनसः।

अर्थ—वृक्ष की जड़ से अलग होता हुआ घास जिस तरह फिर वृक्ष की जड़ को नहीं स्पर्श करता इसी प्रकार पाप मुझको स्पर्श न करे। स्नान करने से जिस प्रकार मनुष्य मलरहित हो जाता है तथा जिस प्रकार पवित्रता से शुद्ध किया हुआ घी कीट आदि के दोष से रहित हो जाता है उसी प्रकार (यह) जल मुझको पाप से रहित करे।

उपरान्त हाथ में जल लेकर नाक से लगावे और श्वास को रोके रहे। शक्ति के अनुसार तीन व एक बार "ऋतञ्च सत्यञ्च" इस मन्त्र को पढ़े (अथवा स्नान के समय जल में गोता लगा कर ३ वा १ वार पढ़े) और ध्यान करे कि यह जल नासिका के दाहिने छिद्र द्वारा भीतर जाकर अन्तःकरण को साफ कर बांई नासिका के छिद्र से निकल आया है। तब उस जल को न देख कर बांई ओर पृथ्वी पर पटके। विनियोग सहित मन्त्र यह है। ॥ विनियोगः ॥

ॐ अघमर्षण सूक्तस्याघमर्षण ऋषिरनुष्टुप्छन्दः भाववृतो देवता अश्वमेधावभृथे विनियोगः।

ॐ ऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत। ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रोऽअर्णवः। समुद्रा-दर्णवादधिसंवत्सरोऽअजायत। अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतोवशी। सूर्या चन्द्रमसौ धाता यथा पूर्व्वमकल्पयत् दिवञ्च पृथिवीञ्चा-न्तरिक्षमथोस्वः। इसकी भाषा पहले ११ सफे में लिख चुके हैं।

अब हाथ में जल लेकर "अन्तश्चरसि" इस मन्त्र को पढ़ कर आचमन करे। विनियोग सहित मन्त्र यह है:—

ॐ अन्तश्चरसीति तिरश्चीन ऋषिरनुष्टुप्छन्दः आपो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः। मन्त्रः॥

ॐ अन्तश्चरसि भूतेषु गुहायां विश्वतो मुखः।
त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कार आपो ज्योती रसोऽमृतम्।

अर्थ—हे जल आप भूतमात्र के मध्य में विचरते हो। इस ब्रह्मांडरूप गुहा में सब ओर आपकी गति है और तुमही यज्ञ हो वषट्कार हो, जलरूप हो, ज्योतिः स्वरूप हो, रस रूप और अमृत भी हो।

तब अर्घे में पुष्प, चन्दन, अक्षत, जल ले खड़ा होकर "ॐ भूर्भुवः स्वः" सहित गायत्री मन्त्र पढ़कर सूर्य को तीन अर्घ्य दे। सन्ध्या योग्यकाल बीत जाने के बाद *"आकृष्णेन रजसा" इत्यादि मन्त्र से चौथा अर्घ्य देवे। अथ विनियोगः॥

ॐ भूर्भुवः स्वरिति महाव्याहृतीनां परमेष्ठी प्रजापतिर्ऋषि अग्नि वायु सूर्यादेवताः गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांसि ॐ तत्सवितुरित्यस्य विश्वामित्रऋषिः सविता देवता गायत्री छन्दः अर्घ्यदाने विनियोगः ॥मन्त्रः॥ ॐ *भूर्भुवः

---

* एकं वाहन नाशाय, द्वितीयं शस्त्रनाशनम्।
असुराणां बधार्थाय, तृतीयार्घ्यं विदुर्बुधाः॥ १॥
* अथवा। ॐ एहि सूर्य सहस्रांशो तेजोराशे जगत्पते।
अनुकंपय मां भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर! (नमोस्तुते)॥
टीका—प्रथम अर्घ्य से वाहन (सवारी) का नाश, दूसरे से शस्त्र (हथियार) का नाश और तीसरे से राक्षसों का नाश हो इसी कारण पंडितों ने ३ अर्घ्य देने को लिखा है।

स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो-योनः प्रचोदयात् ओं ब्रह्मस्वरूपिणे सूर्यनाराय-णाय नम इदमर्घ्यं दत्तं नमम ।

इसी मन्त्र से ३ अर्घ्य देना तीन या चार अर्घ्य देने के बाद अर्घे में जो जल शेष रहता है उसको "पश्येम शरदः शतं जीवेमशरदः शत ॐ शृणुयाम शरदः शतंप्रब्रवाम शरदः शतमदीनाःस्याम शरदः शतम्भूयश्चशरदः शतात्" । इस मन्त्र से अभिमन्त्रित करके नेत्रों में काजल की भांति लगाने से आँखों में प्रकाश बढ़ता है। यह मनुस्मृति पारस्कर गृह्य सूत्र आदि ग्रन्थों में लिखा है ।

*सन्ध्या का समय बीतने पर इस मन्त्र से चौथा अर्घ्य देना।

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च ॥ हिरण्ययेन सविता रथेन देवो याति भुवनानि पश्यन् ब्रह्मस्वरूपिणे सूर्यनारायणाय नम इदमर्घ्यं दत्तं नमम ॐ असावादित्योब्रह्म

तब एक पैर से खड़े हो कर अंजली बांध कर आगे लिखे हुए चार मन्त्रों से सूर्य का उपस्थान करे । ॥ विनियोगः ॥

---

* प्रातःकाल सन्ध्या करने का अच्छा समय तारों के सामने, मध्यम तारे छुपने पर तथा सूर्य के सामने निकृष्ट है। और ४ घड़ी काल बीतने पर प्रायश्चित्त होता है इसी से ४ अर्घ्य देना चाहिये। सन्ध्या ठीक समय पर करने से कामधेनु के समान फल देती है।

ॐ उद्वयमित्यस्य हिरण्यस्तूपऋषिर्गायत्रीच्छंदः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः । अथ मन्त्र ।।

ॐ उद्वयं तमसस्परिस्वः पश्यन्त ऽउत्तरम् ।
देवं देवत्रा सूर्यमगन्मज्योतिरुत्तमम् ।

अर्थ—तम अर्थात् अप्रकाशक रूप भूलोक से बहुत ऊपर स्थित स्वर्गलोक को अच्छे प्रकार से देखते हुए (अर्थात् उसको लाँघ कर) सूर्यदेव से रक्षित मैं अग्नि आदि ज्योति वालों से उत्तम ज्योति स्वरूप सूर्यदेव को प्राप्त होऊँ ।।

।। विनियोगः ।।

ॐ उदुत्यमितिप्रस्कण्व ऋषिर्गायत्रीच्छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः ।। ।। मन्त्रः ।।

ॐ उदुत्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः
दृशेविश्वाय सूयम् ।।

अर्थ—बुद्धि के बढ़ाने वाली किरणें अग्निमय तेजोमय द्वारा उत्पन्न हुआ कर्मफल जिससे ऐसे प्रसिद्ध सूर्यदेव संसार के देखने के लिये ऊपर को लिये चलती हैं ।। विनियोगः ।।

ॐ चित्रमित्यस्य कौत्सऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः ।।

ॐ चित्रं देवानामुदगादनीकंचक्षुर्मित्रस्यव-
रुणस्याग्नेः । आप्राद्यावापृथिवीऽअन्तरिक्षठं०
सूर्य्यऽआत्मा जगतस्तस्थुषश्च ।

अर्थ—मित्र देवता वरुणजी और अग्निदेव के नेत्ररूप, इन तीन देवताओं के ही नहीं किन्तु सब के नेत्र अर्थात् सूर्य उदय होने पर ही सब देव मनुष्य आदि संसार का रूप प्रगट देख पड़ता है इससे सब के चक्षु और दीप्तमान किरणों के समूह श्री सूर्य भगवान् जो स्वर्गलोक मृत्युलोक और आकाश को अपने किरणों से पूर्ण करते हैं स्थावर, जङ्गम और विश्व के अन्तर्यामी हैं या स्थावर, जङ्गम विश्व-स्वरूप हैं वह श्री सूर्य्यनारायण तेज(प्रकाश) सहित उदय हुए उदय होने पर नक्षत्रों की चमक को ले लेते हैं यही आश्चर्य है ॥ विनियोगः ॥

ॐ तच्चक्षुरित्यक्षरातीत पुरउष्णिक् छन्दो-दध्यङ्ङाथर्वणऋषिः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः ॥ ॥अर्थ मन्त्रः॥

ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम-शरदः शतञ्जीवेमशरदः शतᳪं शृणुयामशरदः शतं प्रब्रवामशरदः शतमदीनाः स्यामशरदः शतं भूयश्च शरदः शतात् ॥

अर्थ—देवताओं के प्रिय करने वाले निर्मल संसार के नेत्र-स्वरूप सूर्यनारायण पूर्व दिशा में उदय होते हैं उनकी कृपा से हम सौ वर्ष तक देखते हुए हमारी आंख अच्छी बनी रहे, सौ वर्ष तक जीवित रहें हमारा जीना पराये आधीन न रहै, सौ वर्ष तक हमारी बाणी बनी रहै, सौ वर्षतक किसी से दीनता न करें केवल सौ ही वर्ष तक नहीं किन्तु सौ से अधिक वर्ष तक भी हम देखें, जियें, सुनें, कहें और अदीन रहें इति।

उपरान्त आगे लिखे मन्त्रों से तीन बार अङ्गन्यास करे अर्थात् इसे पढ़कर हृदय, शिर, शिखा, दोनों भुजा, दोनों नेत्रों को छुए और "अस्त्राय फट्" कहकर अस्त्रमुद्रा यानी अपने अंगूठे से अनामिका और कनिष्ठा को दबाकर सीधे हाथ से ऊपर की दो उंगलियों से बांये हाथ पर ताली बजावै इसी प्रकार तीन आवृत्ति करे।

ॐ हृदयाय नमः ॥ ॐ भूःशिरसे स्वाहा ॥ ॐभुवः शिखायै वषट् ॥ ॐस्वः कवचाय हुम्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः नेत्राभ्याम् वौषट् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अस्त्राय फट् ॥ गायत्री से शरीर में न्यास करे ॥

तत्पदं पातु मे पादौ जंघे मे सवितुः पदम् ॥
वरेण्यं कटिदेशं तु नाभिं भर्गस्तथैव च ॥१॥
देवस्य मे तु हृदयं धीमहीति गलं तथा।
धियो मे पातु जिह्वायां यः पदं पातु लोचने॥२॥
ललाटे नः पदं पातु मूर्द्धानं मे प्रचोदयात्।

अर्थ—तत्पद मेरे पैरों की सवितुः पद जंघा की वरेण्यं पद कटिकी, भर्गःपद नाभि की देवस्य पद हृदय तथा धियःपद जिह्वा की यः पद नेत्रों की, नः पद ललाट की, प्रचोदयात् पद मस्तक की रक्षा करे। इस तरह गायत्री न्यास करे तब गायत्री के ऋषि आदि को आगे लिखे हुए विनियोग आदि से स्मरण करे। यथा— ॥ विनियोगः ॥

ॐ कारस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्रीछन्दोऽग्निर्देवता शुक्लो वर्णः जपे विनियोगः।। ॐ त्रिव्याहृतीनां प्रजापतिर्ऋषिर्गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांसि अग्निवाय्वादित्यादेवता जपे विनियोगः ।

ॐ गायत्र्या विश्वामित्र ऋषिर्गायत्रीछन्दः सविता देवता अग्निर्मुखमुपनयने जपे विनियोगः

अब आगे लिखे हुए मन्त्र के अर्थ के अनुसार गायत्री का ध्यान करे ।

ॐ श्वेतवर्णा समुद्दिष्टा कौशेयवसना तथा । श्वेतैावलेपनः पुष्पैरलंकारैश्च भूषिता । आदित्य मण्डलस्था च ब्रह्मलोकगताथवा । अक्षसूत्रधरा देवी पद्मासनगता शुभा ।

अर्थ—जो श्वेतवर्ण कही गई है सफेद ही रेशम का वस्त्र, पुष्प, चन्दनादि अनुलेपन से युक्त तथा श्वेत आभूषणों से शोभित है और सूर्यमण्डल अथवा ब्रह्मलोक में रुद्राक्ष की माला हाथ में लिये पद्मासन में स्थित है। ऐसी शुभ कामना देने वाली देवी का मैं ध्यान करता हूं ।

ॐगायत्रीं त्र्यक्षरां बालां साक्षसूत्र कमण्डलुम् । रक्तवस्त्रां चतुर्वक्त्रां हंसवाहन संस्थिताम्।। १।। ऋग्वेद सत्कृतोत्संगां ब्रह्मलोकनिवासिनीम् ।
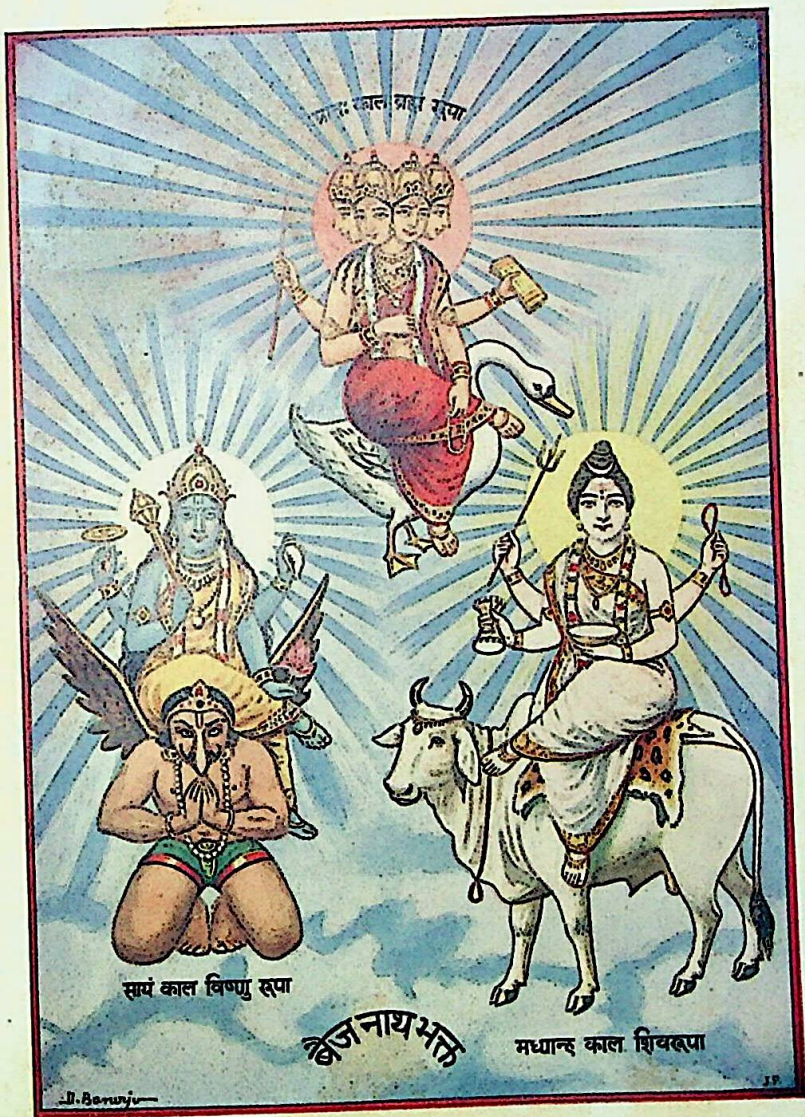
"त्रिकाल संध्या स्वरूपाणि"

आवाहयाम्यहं देवीमायान्तीं सूर्यमण्डलात् ॥२॥
आगच्छवरदे ! देवी त्र्यक्षरे ! ब्रह्मवादिनी !
गायत्रि छन्दसां मातर्ब्रह्मयोने नमोस्तु ते ।

तीन अक्षर वाली गायत्री देवी कन्या के समान चेष्टा वाली लाल रंग ४ मुख ४ हाथ, दो लाल कपड़े (धोती और चोली) पहने हुए अक्ष (रुद्राक्ष माला) सूत्र (जनेऊ सहित दंड) पुस्तक तथा कमंडलु (तोंबी) हाथों में लिये हंस पर बैठी हुई ब्रह्माजी के स्वरूप के समान ब्रह्मलोक में रहने वाली सूर्यमण्डल में से निकल कर अपने हृदय में प्रवेश करती हुई का ध्यान करता हुआ जप करे। इसकी आकृति चित्र में है।

ॐ तेजोसीतिदेवा ऋषयः शुक्रं दैवतं गायत्रीछन्दो गायत्र्यावाहने विनियोगः ॥ ॥ अथ मंत्रः ॥

ॐ तेसि जोशुक्रमस्य मृतमसि ॥ धामनामासि प्रियं देवानामनाधृष्टं देवयजनमसि । ॥ भाषार्थ ॥

मंत्र के अनुसार गायत्री का ध्यान करके आगे गायत्री का नीचे लिखे मन्त्र से आवाहन करे। यथा— ॥विनियोगः॥

ॐ तुरीयपदस्य मेरुपृष्ठऋषिः परमात्मा देवता-मोक्षार्थे जपे विनियोगः । ॥ अथ मन्त्रः ॥

ॐ गायत्र्यस्येकपदी द्विपदी त्रिपदी चतुष्पद्यप-दसि नहि पद्यसे नमस्ते तुरीयाय द

प्रदाय परो रजसे* सावदोमा प्रापत् ॥ १ ॥

भाषा—हे गायत्री! आप त्रिलोकी रूप एक चरण से एकपदी हो, त्रयी विश्वरूप पाद से द्विपदी हो, प्राण आदि तीसरे पाद से आप त्रिपदी हो, मण्डल के भीतर विद्यमान पुरुष रूप से आप चतुष्पदी हो, इन ही चार उपासक पदों से जानी जाती हो, इससे आप अपद् हो और ध्यान से दर्शन के योग्य और रज से परे वर्तमान अर्थात् शुद्ध सत्वस्वरूप आपको चतुष्पद अर्थात् ब्रह्मा, विष्णु, शिव इन तीनों से भिन्न ब्रह्मस्वरूप आपको अथवा कारणरूप तीनों उपाधि से रहित ईशपदरूप आपको नमस्कार है। जिस नमस्कार से वह आपकी प्राप्ति में विघ्न करने वाला पाप और पापका काम जो आपकी प्राप्ति में विघ्न करता है वह मुझको न प्राप्त होवे अर्थात् मैं परब्रह्मरूप आपको प्राप्त होऊँ।

अथ गायत्री रहस्योक्त शाप विमोचन विधिः।

शापमुक्ता हि गायत्री चतुर्वर्ग फलप्रदा।
अशापमुक्ता गायत्री चतुर्वर्ग फलान्तका ॥ १ ॥

ॐ अस्य श्री ब्रह्मशापविमोचनमंत्रस्य ब्रह्मऋषिः भुक्ति मुक्ति प्रदा ब्रह्मशाप विमोचनी गायत्री शक्तिर्देवता गायत्री छन्दः ब्रह्मशाप विमोचने विनियोगः ॥ ॐ गायत्री ब्रह्मेत्युपासीत यद्रुपं

---

*आचारादर्शकार पहले संध्याविधायक वचनों के संग्रहस्थल में "माप्रापत्" यहां तक मन्त्र लिख आगे सन्ध्या लिखने के समय "परोरज से" इतना ही लिखते हैं और "सावदो माप्रापत्" इतने अंश को अर्थवाद लिखा है इससे जो मनुष्य अर्थवाद सहित अर्थात फलस्तुति पढ़ा चाहे वह ता माप्रापत् तक पढ़े नहीं तो "परोरज से" यहाँ तक ही मन्त्र पढ़े इसलिये "सावदोमाप्रापत्" यहाँ तक ही मन्त्र पढ़ना ठीक नहीं है।

ब्रह्म विदो विदुः। तां पश्यन्ति धीराः सुमनसा वाचामग्रतः॥ ॐ वेदान्तनाथाय विद्महे हिरण्यगर्भाय धीमहि तन्नो ब्रह्म प्रचोदयात् ॐ देवी गायत्री त्वं ब्रह्म शापाद्विमुक्ताभव॥ १॥ ॐ अस्य श्री वसिष्ठशापविमोचनमंत्रस्य निग्रहानुग्रहकर्त्ता वसिष्ठऋषिः वसिष्ठानुग्रहीता गायत्री शक्तिर्देवता विश्वोद्भवा गायत्री छन्दः वसिष्ठशापविमोचनार्थे जपे विनियोगः॥ २॥ ॐसोहमर्कमयंज्योतिरहं शिव आत्म ज्योतिरहं शुक्रः सर्वज्योति रसोऽस्म्यहम्। इत्युक्त्वा योनिमुद्रां प्रदर्श्य गायत्री त्रयं पठित्वा॥ ॐ देवि गायत्रि त्वं वसिष्ठशापाद्विमुक्ता भव॥ २॥ ॐ अस्यश्रीविश्वामित्र शाप विमोचन मन्त्रस्य नूतन सृष्टिकर्ता विश्वामित्र ऋषिःविश्वामित्रानुग्रहीता गायत्री शक्तिर्देवता वाग्देहा गायत्री छन्दः विश्वामित्र शापविमोचनार्थे जपे विनियोगः॥ ॐ गायत्री भजाम्यग्निमुखीं विश्वकर्मा यदुद्भवादेवाश्चक्रिरे विश्वसृष्टिं तां कल्याणीमिष्टकरीं प्रपद्ये॥ यन्मुखान्निसृतो ऽखिलवेदगर्भः। शापयुक्तातुगायत्री सफला न कदाचन॥ शापादुत्तारिता सा तु भुक्तिमुक्तफलप्रदा॥ १॥ (प्रार्थना) बहुरूपिणि गायत्री दिव्ये सन्ध्ये सरस्वति॥ अजरे अमरे चैव ब्रह्मयोनेनमोस्तुते॥ ब्रह्मशापाद्विमुक्ता भव॥ वसिष्ठशापाद्विमुक्ता भव। विश्वामित्र शापाद्विमुक्ता भव॥ इतिशापविमोचनम्।

॥ अथ २४ मुद्रा जप के आदि में करे॥

सुमुखं संपुटं चैव विततं विस्तृतन्तथा।
द्विमुखं त्रिमुखं चैव, चतुः पंचमुखं तथा॥
षण्मुखाऽधो मुखं चैव, व्यापकाञ्जलिकं तथा।
शकटं यमपाशं च ग्रन्थितं चोन्मुखोन्मुखं।

मुद्राओं के चित्र अलग देखना॥

प्रलम्बं मुष्टिकं चैव, मत्स्यः कूर्मवराहकौ ।
सिंहाक्रान्तं महाक्रान्तं मुद्गरं पल्लवं तथा ॥
एतामुद्राश्चतुर्विंशज्जपादौ परिकीर्तिताः ।

इसके बाद सवेरे पूर्व की ओर, दोपहर को सूर्य अर्थात् उत्तर की ओर और सन्ध्या को पश्चिम की ओर मुँह कर सवेरे बैठ कर दुपहर को खड़ा होकर और शाम को पश्चिम मुख बैठा हुआ एकाग्र चित्र हो ध्यान लगाये हुए मन में स्पष्ट मन्त्र के वर्णों का उच्चारण और चित्र के अनुसार ध्यान करता हुआ गायत्री का जप करे। परन्तु पहले इसका पाठ करना।

गायत्री हृदयस्तोत्रम्

नारद उवाच।

भगवन्देवदेवेश ! भूतभव्यजगत्प्रभो ! । कवचं च श्रुतं दिव्यं गायत्री मंत्र विग्रहम् । ।१ ॥ अधुनाश्रोतुमिच्छामि गायत्री हृदयं परम् । यद्धारणाद्भवेत्पुण्यं गायत्री जपतोऽखिलम् ॥ २ ॥

नारायण उवाच ॥

देव्याश्चहृदयं प्रोक्तं नारदाथर्वणे स्फुटम् । तदेवाहं प्रवक्ष्यामि रहस्यातिरहस्यकम् ॥ ३ ॥ विराट्रूपां महादेवीं गायत्रीं वेदमातरम् ॥ ध्यात्वास्तस्यास्तथांगेषु ध्यायेदेताश्च देवताः ॥ ४ ॥ पिंडब्रह्मांडयोरैक्याद्भावयेत्स्वतनौ तथा ॥ देवीरूपेनिजेदेहेतन्मयत्वाय साधकः ॥ ५ ॥ नादेवोभ्यर्चयेद्देवमितिवेदविदोविदुः ॥ ततोभेदायकायेस्व भावयेद्देवताइमाः॥६॥ अथातः संप्रवक्ष्यामितन्मयत्वमथोभवेत् ॥ गायत्री हृदयस्यास्याप्यहमेव ऋषिः स्मृतः ॥ ७ ॥ गायत्री छन्द उद्दिष्टं देवता परमेश्वरी । पूर्वोक्तेन प्रकारेण कुर्यादङ्गानिषट्क्रमात् । आसने विजनेदेशे ध्यायेदेकाग्रमानसः॥८॥

जप के पूर्व की २४ मुद्राओं का चित्र
१ सुमुखं
२ संपुटं
३ विततं
४ विस्तृतं
५ द्विमुखं
६ त्रिमुखं
७ चतुर्मुखं
८ पञ्चमुखं
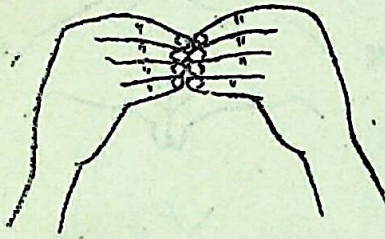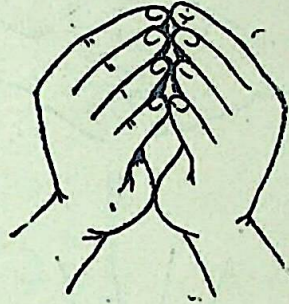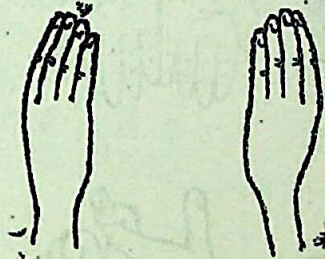
जप के पूर्व की २४ मुद्राओं के चित्र।
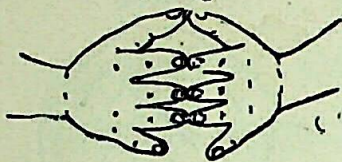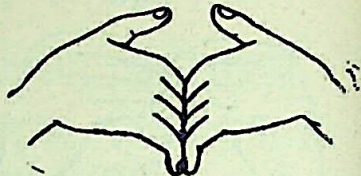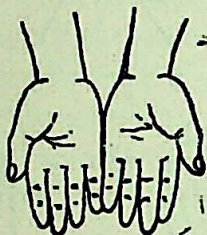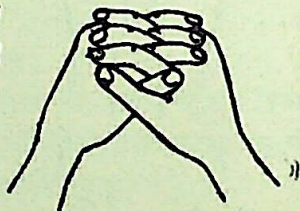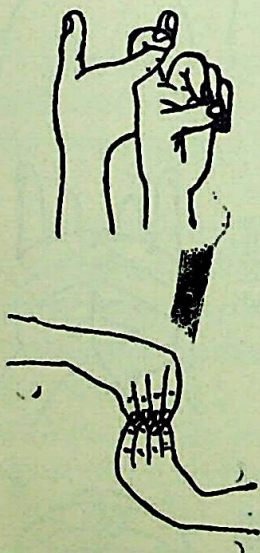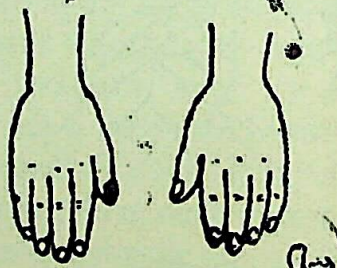
करमाला का चित्र
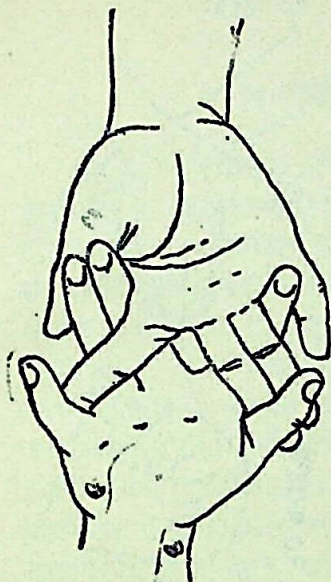
१ अंक से आरम्भ करके १० अंक तक जप करे। दुबारा जपते समय अङ्गूठे को सुमेरु से नीचे ले जाना इसी प्रकार ११ बार जपने से १ माला होगी। हर प्रकार की मालाओं का विधान योगिनी तंत्र में देखिये।
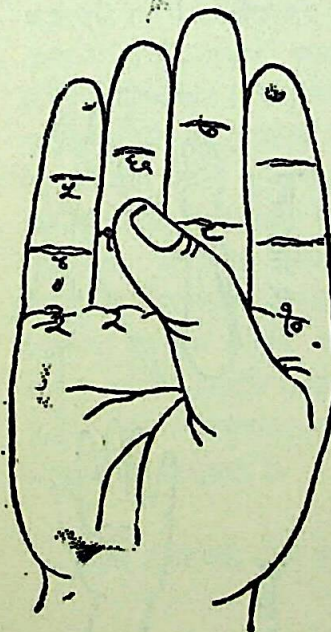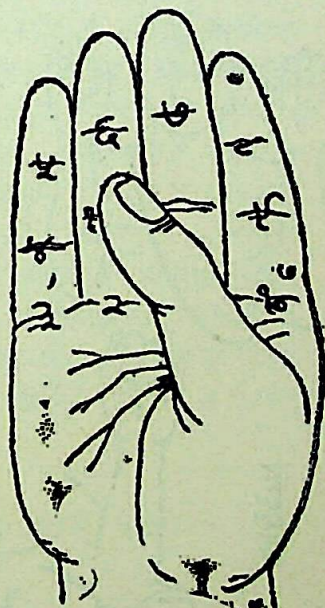
जप के पूर्व की २४ मुद्राओं के चित्र ।
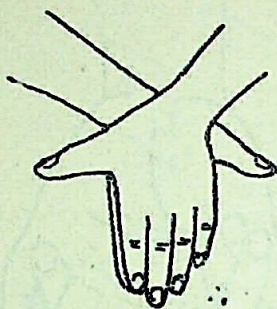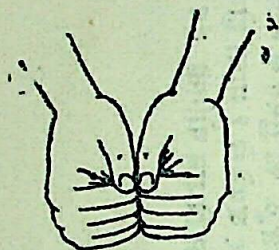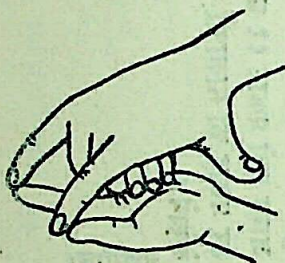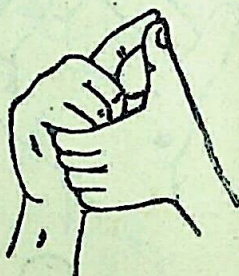
॥ अथाङ्ग न्यासः ॥

द्यौर्मूर्द्ध्नि दैवतम् ॥ दन्तपंक्तावश्विनौ ॥ उभे सन्ध्ये चोष्ठौ ॥ मुखमग्निः ॥ जिह्वासरस्वती ॥ ग्रीवायां तु बृहस्पतिः ॥ स्तनयोर्वसवोष्टौ ॥ बाह्वोर्मरुत; ॥ हृदये पर्जन्यः ॥ आकाशमुदरे ॥ नाभावन्तरिक्षम् ॥ कट्यौरिन्द्राग्नी ॥ जघनेविज्ञानघनः प्रजापतिः॥ कैलास मलये ऊरू ॥ विश्वदेवाजान्वोः जंघायां कौशिकः ॥ गुह्यमयने ॥ ऊरू पितरः ॥ पादौपृथ्वी ॥ वनस्पतयोङ्गुलिषु ॥ ऋषयोरोमाणि ॥ नखानि मुहूर्तानि ॥ अस्थिषु ग्रहाः ॥ असृङ्मांसऋतवः॥ संवत्सरावै निमिषम् ॥ अहोरात्रावादित्यश्चन्द्रमाः ॥ प्रवरां दिव्यां गायत्रीं सहस्रनेत्राशरणमहंप्रपद्ये ॥ ॐतत्सवितुर्वरेण्यायनमः ॥ ॐतत्पूर्वाजयाय नमः ॥ ओंतत्प्रातरादित्याय नमः ॥ तत्प्रातरादित्य प्रतिष्ठाय नमः ॥ प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति ॥ सायमधीमानो दिवसकृत पापं नाशयति ॥ सायं प्रात रधीयानो अपापो भवति ॥ सर्वतीर्थेषु स्नातो भवति ॥ सर्वैर्देवैर्ज्ञातोभवति ॥ अवाच्य वचनात्पूतोभवति ॥ अभक्ष भक्षणात्पूतोभवति ॥ अभोज्य भोजनात्पूतो भवति ॥ असाध्यसाधनात्पूतो भवति दुष्प्रतिग्रह शत सहस्रात्पूतो भवति ॥ सर्वप्रतिग्रहात्पूतो भवति ॥ पङ्क्तिदूषणात्पूतो भवति ॥ अनृतवचनात्पूतो भवति ॥ अथाऽब्रह्मचारी ब्रह्मचारी भवति ॥ अनेन हृदयेनाधीतेन क्रतुसहस्रेणेष्टं भवति ॥ षष्टिशत सहस्र गायत्र्या जप्यानि फलानि भवन्ति ॥ अष्टौब्राह्मणान् सम्यग्ग्राहयेत ॥ तस्यसिद्धिर्भवति ॥ य इदं ।नित्यमधीयानो ब्राह्मणः प्रातः शुचिः सर्वपापैःप्रमुच्यत इति ॥ ब्रह्मलोके महीयते ॥ इत्याह भगवान् श्री नारायणः ॥

जपने में गायत्री मन्त्र का स्वरूप ऐसा है । देखिये:—

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ ॥

नागदेवः—गायन्तं त्रायते यस्माद्गायत्री तेन गीयते ।

जप करनेवाले की जिससे रक्षा हो उसी को गायत्री कहते हैं ।

गायत्री के २४ अक्षर इस प्रकार हैं ।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
तत्	स	वि	तुर्	व	रे	णि	यं	भ	र्गो	दे	व
१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
स्य	धी	म	हि	धि	यो	यो	नः	प्र	चो	द	यात्

किन्तु जप करने के समय (ण्यं) ही बोलना चाहिये । इयादि पूरणः (सू०) पाद इत्यनुवर्त्तते । इयादि पूरणो यस्य स इयादि पूरणः, अत्रायमर्थः । यत्र गायत्र्यादौच्छन्दसि अक्षर संख्या न पूर्यते तत्र इयादिभिः पूरयितव्या । यथा तत्सवितुर्वरेणियम् । इति पिंगलम् । वरेण्यं वरणीयम् । वृञएण्यः, इत्यौणादिक एण्य प्रत्ययः ।

॥ अथ गायत्री व्याख्या ॥

ॐ तत्सवितुरिति, अस्यार्थः ॥ तत् तं भर्गः तेजः धीमहि ध्यायेम॥ भाषार्थः । ॐ सः सविता देव का भर्ग नामी जो तेज है उसे ध्यान करते हैं । यद्यपि तं यह पद भर्ग का विशेषण नहीं है । तथापि यत् शब्द के प्रयोग से तत् शब्द का लाभ होता है । और तत् शब्द से यत् शब्द का । जैसा कि योगी "याज्ञवल्क्य" ने कहा है । (तच्छब्देन तु यच्छब्दमित्यादि) तत् शब्द से यत् शब्द को जानना चाहिये और तत् शब्द के उदाहरण में यत् शब्द उदाहृत होता है । (कथं भूतस्य सवितुः देवस्य) सविता

उत्पन्न कर्त्ता ॥ श्लोक ॥ सविता सर्व भूतानां सर्वभावान्प्रसूयते ॥ सविता त्यवनाच्चैव सविता तेन उच्यते ॥ १ ॥ अर्थात् यह सब जीवों के सब भावों को उत्पन्न करता है। पुनः किं विशिष्टस्य देवस्य) फिर वह कैसा देवता है। (दीप्ति) प्रकाश, क्रीड़ा, लीला आदि व्यवहार से युक्त है ॥ श्लोकः ॥ दीव्यते क्रीड़ते यस्माद्रोचते द्योतते दिवि ॥ तस्माद्देव इति प्रोक्तः स्तूयते सर्व देवतैः ॥ २ ॥ स्वर्ग में क्रीड़ा, रोचन, प्रकाश आदि व्यवहारों से युक्त है। इस लिये देव ऐसा कहा गया। जिसकी सब देवता स्तुति करते हैं। ॥ श्लोकः ॥ चिंतयामो वयं भर्गन्धियोयोनः प्रचोदयात्। धर्मार्थ-काममोक्षेषु बुद्धिवृत्तिः पुनः पुनः ॥३॥ सः (भर्गः) तेज (नः) हमारी बुद्धिवृत्ति को प्रेरित करे। अर्थात धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष में हम सब की बुद्धि को लगावै। जिसको यहाँ भर्ग शब्द करके बहुत प्रकार का माहात्म्य कहा गया है। जो सविता के मण्डल में स्थित आदित्य देवता स्वरूप पुरुष कहा जाता है। ॥पुनः श्लोकः॥ भृस्ज पाके भवेद्धातूयोस्मात्पाचयते त्वसौ ॥ *भ्राजते †दीप्यते तस्मा-ज्जगच्चान्ते हरत्यपि ॥४॥ कालातिरूपमास्थाय सप्तार्चि सप्तर-श्मिभिः ॥ भ्राजते यत् स्वरूपेण तस्माद्भर्गः स उच्यते ॥ ५ ॥ भेति भीषयते लोकान् रेति रंजयते प्रजाः ॥ इत्यगच्छत्यजस्रंय-द्भगवान्भर्गः स उच्यते ॥ ६ ॥ जब भृस्ज पाके इस धातु से रूप बनता है, तो यह भाव होता है कि जगत् को परिपूर्ण करता है। और जबभ्राज्दीप्तौ से प्रयोग किया जाता है तब यह अर्थ होता है कि जो जगत् को प्रकाशित करता है अर्थात् सप्त किरणधारी भगवान् भास्कर! जिस स्वरूप करके दीप्तमान किम्वा (यानी) प्रकाशित होते हैं। इसी से वह भर्ग कहा जाता है। (भ) का अर्थ यह है कि सब लोगों को डराते हैं। (र) से यह तात्पर्य

* प्रकाश करने वाला। † शोभा देने वाला।

निकला कि सब प्रजा को रंजित हर्षित तथा अनुरागयुक्त करते हैं, (ग) का यह अर्थ है कि सर्वदा निरंतर विद्यमान रहते हैं। इसी से भगवान् भर्ग कहाते हैं। यद्यपि गायत्री मन्त्र में (सवितुर्भर्गः) इस सम्बन्ध द्योतक पद से सविता और भर्ग की भिन्नता पाई जाती है। यथा (सम्बन्धे षष्ठी) इस विचार पर सविता का भर्ग ऐसा प्रतीत होता है तो भी परमार्थ के यथार्थ विचार में कुछ भेद नहीं है। दोनों एक हैं जो पदार्थ सविता सोई भर्ग है। जैसे (राहोः शिरः) इस वाक्य का षष्ठी पद है कि राहु का शिर राहु से पृथक् नहीं कहा जा सकता ऐसे ही भर्ग की ऐक्यता सिद्ध हुई फिर वह कैसा भर्ग है? (वरेण्यं वरितुं योग्यम्) वर लेने के योग्य अर्थात् सृष्टि समुदाय में से सर्वोपरि श्रेष्ठ समझ कर प्रार्थना करने वा ग्रहण करने के योग्य है। **तथाच याज्ञवल्क्यः।**

॥ श्लोकः ॥

वरेण्यं वरणीयं च यं संसारभीरुभिः।
आदित्यान्तर्गतं यच्च भर्गाख्यं वा मुमुक्षुभिः॥७॥

वह कैसा भर्ग है? श्रेष्ठ ग्रहण करने योग्य और जो सूर्य के भीतर प्राप्त है। उसी भर्ग नामी तेज का यमराज तथा संसार से डरे हुए वा मोक्ष के अभिलाषी मुनि लोग ध्यान करते हैं। फिर वह कैसा भर्ग है? जो भूलोक से लेकर सप्तलोक पर्यन्त व्याप्त होके ठहरा हुआ उन लोकों को प्रकाश करता हुआ जो क्रम से एक के ऊपर दूसरे स्थित हैं। उन सातों लोकों को दीपक की भाँति उजेला करे हुए है। फिर वह कैसा भर्ग है? (आपो ज्योतिरसोमृतम्) आपः जलस्वरूप । फिर (ज्योतिः) तेजः स्वरूप है। अर्थात् मणि, धातु, पाषाण, प्रभृति, स्थावर पदार्थों में तेज होकर रहता है। फिर वह भर्ग कैसा है? (रसः) वृक्ष औषधी तृण आदि पदार्थों में रस

चराचर स्वरूप ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर, सूर्य और नाना प्रकार के देवताओं को यह परब्रह्म स्वरूप प्रदीप के समान प्रकाशित कर रहा है। वही भर्ग हमारे जीव और जीवार्थ अर्थात् जीव के उपकरण (सामान यानी इन्द्री आदिक) का ज्योतिरूप है। उन लोकों का जिनके सात नाम हैं। और वही भर्ग सातों लोक और विष्णु स्थान को हमारे आत्मारूपी ब्रह्म में ज्योतियों के साथ एक भाव करता है। ऐसी चिन्ता उस सविता देव की भर्ग नामी तेज है। उसे हम ध्यान करते हैं जो ग्रहण करने के योग्य और सब पदार्थ देने वाला वह हमारी बुद्धि वृत्ति को प्रेरित करे, धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष में। इति शांतिः ३।॥ इति गायत्री व्याख्या ॥

जप के अन्त में—आठ मुद्रा करना।

सुरभिर्ज्ञानवैराग्यं योनिः शंखोथ पंकजं।
लिङ्गं निर्वाणमुद्राष्टौ जपान्ते च प्रदर्शयेत् ॥

यहाँ गायत्री कवच का पाठ करना चाहिये

॥ अथ विसर्जन मन्त्रः ॥

ॐ उत्तरे शिखरे देवी, भूम्यां पर्वतमूर्द्धनि।
ब्राह्मणेभ्योऽभ्यनुज्ञाता, गच्छ देवि! यथा सुखम्॥

अर्थ—भूमि पर वर्तमान जो सुमेरुपर्वत है उसके मस्तक पर जो उत्तम शिखर है उस पर गायत्री देवी स्थित है इस कारण हे देवि! ब्राह्मण जो आपके सेवक हैं. अर्थात् आपके अनुग्रह से प्रसन्न हैं उनके लिये सम्मति का भली भांति प्रयोग करके सुख से अपने स्थान उस उत्तम शिखर पर पधारिये॥

॥ इति प्रातः सन्ध्याप्रयोगः ॥

प्राणायाम के बाद आचमन केलिये "सूर्य्यश्च" के स्थान पर नीचे लिखा विनियोग और मन्त्र पढ़ना चाहिये। और सब मन्त्र वही हैं।

॥ मध्याह्न आचमन का विनियोगः ॥

ॐ आपः पुनन्त्विति विष्णुर्ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः आपो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः

॥ मन्त्रः ॥

ॐ *आपः पुनन्तु पृथिवीं पृथ्वी पूता पुनातु मां पुनन्तु ब्रह्मणस्पतिर्ब्रह्म पूता पुनातु माम्। यदुच्छिष्टमभोज्यञ्चयद्वा दुश्चरितम्मम। सर्वम्पुनन्तु मामापोऽमताञ्च प्रतिग्रह ठं० स्वाहा ॥१॥

॥ मध्याह्न सन्ध्या का ध्यान ॥

ॐ सावित्रीं युवतीं शुक्लां शुक्लवस्त्रां त्रिलोचनाम्। त्रिशूलिनीं वृषारूढ़ां यजुर्वेदेन संस्थिताम् ॥१॥ रुद्राणीं रुद्रदैवत्यां रुद्रलोकनिवासिनीं। वरदांत्र्यक्षरां देवीमायान्तीं सूर्य मण्डलात् ॥२ आगच्छवरदे देवि त्र्यक्षरे रुद्र-

---

* दुपहर की संध्या मध्याह्न में करना न हो सके तो प्रातः काल की संध्या तथा तर्पण करने के बाद करना भी उत्तम है तथा संकल्प में प्रातः के स्थान पर मध्याह्न कहना।

वादिनि । सावित्रि छन्दसां माता रुद्रयोने नमोस्तु ते ॥३॥

॥ मध्याह्न संध्या का अर्थ ॥

सावित्री नाम युवा (जवान अवस्था वाली सफेद साड़ी और चोली पहने हुए तीन नेत्र (आंख) वाली त्रिशूल, कपाल वर और अभय हाथ में लिये हुए; वैल के ऊपर सवार, यजुर्वेद के समान, रुद्राणी का रुद्र देवता है, जो कैलास में रहने वाली वर देनेवाली, जिसके तीन अक्षर हैं, सूर्य मण्डल में से आती हुई को हृदय में धारण करने के लिये बुलाता हूं। हे देवि,! हे तीन अक्षर वाली ! हे सावित्री ! हे वेदमाता ! हे रुद्रयोने ! तुमको नमस्कार है।

॥ सायं सन्ध्या में ॥

प्राणायाम के उपरान्त आचमन के लिये "सूर्यश्चमा" इस मन्त्र के बदले में "अग्निश्च मा" इस मन्त्र को विनियोग सहित पढ़कर आचमन करना चाहिए ॥ विनियोगः ॥

ॐ अग्निश्चमेति रुद्र ऋषिः प्रकृतिश्छन्दः अग्निर्देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः॥ अथमन्त्रः

ॐ *अग्निश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्यु-

---

* सायंकाल की संध्या का समय सूर्य के समक्ष अर्थात् सूर्यास्त न होवे तबही करना उत्तम है। सूर्य छुपने पर मध्यम और तारों के सामने प्रायश्चित्त होने पर ४ अर्घ्य देना।

संकल्प में प्रातः की जगह "सायं" कहना।

कृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्ताम् यदह्ना पापमकार्षं मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना अहस्तदवलुम्पतुयद् किञ्चिद् दुरितं मयि इद-महममृतयोनौ सत्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा ॥

अर्थ—अग्नि देवता, क्रोधाभिमानी देवता, और यज्ञ के पति ब्रह्मा, विष्णु, रुद्रादि देवता, यज्ञ विषयक पापों से वा क्रोध से किये गये पापों से मेरी रक्षा करें, अर्थात् पूजा का अपराध मुझसे न होवे न मुझे ऐसा क्रोध होवे जिससे कोई पाप बन पड़े। मैंने दिन में पराये द्रोह की चिन्ता से दूसरे की निन्दा आदि से, मारने से, चींटी आदि के कुचल जाने से, न खाने योग्य अन्न आदि के खाने और अयोग्य समय में स्त्री-सङ्ग करने से जो पाप किया हो उस पाप को दिन से लखे जाते हुए काल भगवान नाश करें और जो कुछ मेरे से दुरित (पाप) हों उसे मैं अविनाशी और हृदय कमल में स्थित प्रकाशरूप सत्य परमात्मा में होम करता हूं उसी में भली भांति भस्म हो जांय अर्थात वह पाप नष्ट हो जांय और फिर मुझसे न बन पड़े।

॥ सायं संध्या का ध्यान ॥

ॐ वृद्धां सरस्वतीं कृष्णां पीतवस्त्रां चतुर्भुजां ।
शंख चक्र गदा पद्म हस्तां गरुडवाहिनीम् ॥१॥
वैष्णवीं विष्णु दैवत्यां विष्णुलोकनिवासिनीं ।
सामवेद कृतोत्संगामायान्तीं सूर्यमण्डलात ॥२॥

आगच्छवरदे ! देवि ! त्र्यक्षरे विष्णुवादिनि !
सरस्वति छन्दसां मातर्विष्णुयोने नमोस्तु ते ।। ३ ।

अर्थ—बूढ़ी अवस्था श्याम रंग वाली सरस्वती पीली साड़ी और पीली चोली पहिने हुए चार हाथों में शंख, चक्र, गदा पद्म लिये हुए गरुड़ पर बैठी हुई वैष्णवी देवी वैकुण्ठ में रहने वाली सूर्य मंडल में से अपने हृदय में आती हुई को ध्यान करता हूं। हे वर देने वाली ! हे तीन अक्षर वाली ! हे सरस्वती ! हे वेदमातः ! हे विष्णुयोने ! तुझ को नमस्कार है ।

इति श्री आयुर्वेदाचार्य पंडित बिहारीलाल शर्मणा संग्रहीतोऽर्थ सहितस्तथा अर्गलपुर निवासी श्री लक्ष्मीनारायण गोस्वामिना संशोधिता परिवर्द्धिता तथा च तत्सूनु घनश्याम गोस्वामिना पुनः संशोधिता- वर्द्धिता संध्याविधिः समाप्ता ॥

॥ अथ तर्पण विधिः ॥

ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य को नित्य अपने-अपने पितरों का तर्पण करना चाहिये। यह शातातप ऋषि ने कहा है; यथा—

तर्पणन्तु शुचिः कुर्यात् प्रत्यहं स्नातको द्विजः ।
देवेभ्यश्च ऋषिभ्यश्च पितृभ्यश्च यथा क्रमम् ।। १ ।।

अर्थ—स्नातक अर्थात् गृहस्थ द्विज पवित्र होकर नित्य देवता, ऋषि और पितरों का तर्पण क्रम से करें। जो गृहस्थ सूतक आदि निषिद्ध समय से भिन्न समय में तर्पण नहीं करता उसके पितरों को कष्ट होता है यह योगि याज्ञवल्क्य जी ने स्पष्ट कहा है; यथा—

नास्तिक्यादथवा लौल्यान्नतर्पयति वै सुतः ।
पिबन्ति देहनिस्रावं पितरोऽस्य जलार्थिनः ॥२॥

अर्थ—नास्तिकता, चञ्चलता से जो पुरुष तर्पण नहीं करता उसके पितर पिपासित होते हैं और देह से निकले हुए जल (पसीने) को पीते हैं। छान्दोग परिशिष्ट में कात्यायन जी लिखते हैं कि जो तर्पण नहीं करता उसे पाप होता है; यथा—

तस्मात् सदैव कर्तव्यमकुर्वन् महदेनसा । युज्यते ब्राह्मणः कुर्वन् विश्वमेतत् बिभर्त्ति हि ॥३॥

अर्थ—इस कारण निषेध रहित तर्पण के समय सदा तर्पण करना चाहिये न करने से बड़ा पाप होता है। तर्पण करता हुआ ब्राह्मण (आदि) इस विश्व को पालता है।

॥ कुशोत्पाटन विधिः ॥

शुचिर्भूत्वा शुचौदेशेस्थित्वा पूर्वोत्तरा मुखः ।
ॐ कारेणैव मन्त्रेण कुशाःस्पृष्ट्वा द्विजोत्तमः ॥
ॐ विरंचिना सहोत्पन्न परमेष्ठी निसर्गजः ।
दहस्व सर्व पापानि दर्भः स्वस्ति करोभव ॥
पठित्वा, हुंफट्दर्भस्तु सकृच्छित्वा समुद्धरेत् ।
इति कृत्यचिन्तामणौ ॥

तिल तर्पण का निषेध न हो तो तिल और कुश से तर्पण करे लाचारी पर तो केवल मन्त्र से ही तर्पण करे इसमें मरीचि ऋषि और गोभिल का वचन क्रम से प्रमाण है; यथा—

विना तिलैश्च दर्भैश्च, पितॄणां नोपतिष्ठति ।
तिलाभावे निषिद्धाहे सुवर्ण रजतान्विते ॥४॥
तदभावे निषिद्धे तु दर्भैर्मन्त्रेण वा पुनः ।

अर्थ—तिल और कुशा के विना जो तर्पण किया जाता है वह पितरों को नहीं पहुँचता है। तिल के अभाव में वा तिल के निषेध वाले दिन में सोना या चांदी से युक्त, हाथ से तर्पण करे। जब सोना चांदी का भी अभाव हो और तिल तर्पण के निषेध का दिन हो तो केवल मन्त्र पढ़ कर तर्पण करे। अर्थात् उचित समय में तर्पण की नागा न करे। तिल सहित तर्पण के निषेध में धर्मसिन्धुकार ने वहुत सा लिखा है उसमें से थोड़ासा हिन्दी में लिखते हैं (धर्मसिन्धुः) रविवार, मङ्गलवार, शुक्रवार, के दिन प्रतिपद्, षष्ठी, एकादशी, सप्तमी, त्रयोदशी इन पांच तिथियों में, भरणी, मघा, कृत्तिका इन तीन नक्षत्र के दिन जन्म नक्षत्र में घर में जब तर्पण करना और विवाह मङ्गल के दिन इत्यादि अनेक समयों पर तिल का तर्पण न करना चाहिये इसके प्रमाण में दो एक बचन आगे लिखते हैं। यथा (मरीचिः)

सप्तम्यां भानुवारे च गृहे जन्मदिने तथा ।
भृत्य पुत्र कलत्रार्थी न कुर्यात्तिलतर्पणम् ॥५॥

अर्थ—जो यह चाहे कि मेरे स्त्री, पुत्र और नौकर हों वह सप्तमी, रविवार तथा जन्म के दिन, घर में, तिल से तर्पण न करे। इसे बौधायन ऋषि ने भी कहा है; यथा—

विवाहे चोपनयने चौले सति यथा क्रमम् ।
वर्षमर्द्ध तदर्द्धं च नेत्येके तिल तर्पणम् ॥६

अर्थ—मुख्य आचार्य कहते हैं कि विवाह हो तो साल भर, जनेऊ हो तो छः महीने और मुण्डन हो तो तीन महीने तक तिल से तर्पण न करे। जो पितृपक्ष होवे या गंगाजी का तट हो वा तीर्थ हो तो निषेध न मानना और तिल से तर्पण करना यही पृथ्वी चन्द्रोदय में लिखा है; यथा—

तीर्थे तिथि विशेषे च गयायां प्रेतपक्षके। निषिद्धेऽपि दिने कुर्यात्तर्पणं तिल मिश्रितम् ॥७॥

अर्थ—विशेष तीर्थ में *अष्टका आदि विशेष तिथि, गयाक्षेत्र और पितृपक्ष में तिल तर्पण के निषेध वाला दिन भी आ पड़े तब भी निषेध को न माने और तिल से तर्पण करे।

सारांश तिल तर्पण के विषय में आचारादर्श, ब्राह्मण सर्वस्व आदि ग्रन्थों का सिद्धान्त यह है कि (१) घर में तर्पण किया चाहे तो केवल पितृपक्ष ही में तिल सहित जल से तर्पण करें। (२) पितृपक्ष से और समय हो तो घर में तिल से तर्पण न करना केवल जल ही से करना। (३) गया आदि तीर्थ हो तो निषेध वाले दिनों में भी तिल से तर्पण करना। किसे कितनी अंजली देना चाहिये इसे गोभिल ऋषि ने स्पष्ट लिखा है; यथा—

एकैकमञ्जलिं देवा द्वौ द्वौ तु सनकादयः। अर्हन्तिपितरस्त्रीन् स्त्रियः एकैकमञ्जलिम् ॥८॥

अर्थ—देवताओं को एक एक, सनकादिकों को दो दो, पितरों को तीन तीन और माता को तीन अञ्जलि तथा माता से भिन्न शेष स्त्रियों को एक एक अञ्जलि देवे।

---

* अष्टका कार्तिक से चैत्र तक कृष्णाष्टमी को कहते हैं।

आगे श्राद्ध तथा तर्पण किस किस का करे यह व्यवस्था जानने के लिये धर्मशास्त्र का प्रमाणः—निर्णय सिन्धौ सम्वत्सर प्रकरण ५६ अधिकोक्तिः देवता संग्रह में भी देखना।

तातम्बा त्रितयं सपत्न जननी मातामहादि त्रयम् ॥ सस्त्रि स्त्रीतनयादि तात जननी स्वभ्रात-रस्तत् स्त्रियः॥ताताम्बात्म भगिन्यपत्यधवयुग्-जाया पिता सद्गुरुः॥शिष्याप्ता पितरो महालय विधौ तीर्थे तथा तर्पणे ॥६॥ पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरास्तथा ॥ तत्सुता गोत्रजो बन्धुः शिष्याः सब्रह्मचारिणः ॥१०॥

पिता। दादा। परदादा। माता। दादी। परदादी। प्रथम माता वा दूसरी। नाना। परनाना। सकलनाना। नानी पत्निणी। परनानी पत्निणी। सकल नानी पत्निणी। स्त्री। बेटा। बेटी। ताया। चाचा। मामा। पत्निणी। अपना भाई। ताई। चाची। मामी पत्निणी। भावी। बुआ पत्निणी। मासी। भैन प०। बुआ का बेटा प०। मौसी का बेटा प०। भैन का बेटा प०। फूफा। आसड़। स्वसुर। वहनोई॥ सास। गुरू। आचार्य। शिष्य। शिष्ट-

॥ अथ कातीय तर्पणम् ॥

आसन शुद्धी ८।६ पृष्ठ में आचम्य, प्राणनायम्य, 'द्वौदर्भौदक्षिणे हस्तेऽसव्ये त्रीण्यासने तथा। पादमूले शिखायां तु सकृत् यज्ञो-पवीतके॥ (पवित्री धारण नियमः) पवित्री धारण करने के लिये मन्त्र। ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसवऽउत्पुनाम्य-

च्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्यरश्मिभिः। तस्यते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुनेतच्छकेयम्॥ श्री विष्णुः ३ अद्यशुभे अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक वासरे अमुक गोत्र अमुक नाम शर्मा देवऋषि पितृतर्पणमहं करिष्ये॥ इस प्रकार संकल्प कर पूर्व दिशा की ओर मुख कर पवित्री पहिन कर तर्पण का जल जिसमें गिरे ऐसे एक पवित्र कुशा* सहित पात्र को आगे रख कर देवादिकों का आवाहन करे।

ॐ ब्रह्मादयःसुराःसर्वे ऋषयः सनकादयः। आगच्छन्तु महाभागा ब्रह्माण्डोदर वर्तिनः॥११॥

उपरान्त अङ्गुलियों के अग्रभाग से अक्षत चन्दन सहित जल को गिराता हुआ एक एक मन्त्र से एक एक अञ्जलि जल देवे; यथा—

ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगीभ्य एव च। नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेवनमो नमः॥ ३बार॥

ॐ †ब्रह्मातृप्यताम्। ॐ विष्णुस्तृप्यताम्। ॐ रुद्रस्तृप्यताम्। ॐ प्रजापतिस्तृप्यताम्। ॐ देवास्तृप्यन्ताम्। ॐ छन्दाँसितृप्यन्ताम्। ॐ वेदास्तृप्यन्ताम्। ॐ ऋषयस्तृप्यन्ताम्। ॐ संवत्सरः सावयवस्तृप्यताम्। ॐ देव्यस्तृप्यन्ताम्। ॐ पुराणाचार्यास्तृप्यन्ताम्। ॐ गन्धर्वास्तृप्यन्ताम्। ॐ इतराचार्यास्तृप्यन्ताम्। ॐ नागास्तृप्यन्ताम्। ॐ अप्सरसस्तृप्यन्ताम्। ॐ देवानुगास्तृप्यन्ताम्। ॐ सागरास्तृप्यन्ताम्। ॐ

---

* कुशा प्रमाण—होमेतर्पणकालेच विवाहे यज्ञकर्मणि। गर्भहीन कुशां कृत्वा पुत्र दार धनक्षयः॥

† तर्पण में सब जगह प्रथमा विभक्ति लगाना चाहिये।

पर्वतास्तृप्यन्ताम् । ॐ सरितस्तृप्यन्ताम् । ॐ मनुष्यास्तृप्यन्ताम् । ॐ यक्षास्तृप्यन्ताम् । ॐ रक्षांसितृप्यन्ताम् । ॐ पिशाचास्तृप्यन्ताम् । ॐ सुपर्णास्तृप्यन्ताम् । ॐ भूतानितृप्यन्ताम् । ॐ पशवस्तृप्यन्ताम् । ॐ वनस्पतयस्तृप्यन्ताम् । ॐ औषधयस्तृप्यन्ताम् । ॐ भूतग्रामचतुर्विधस्तृप्यताम् । इति देवतर्पणम् ॥

आगे लिखे हुए ऋषियों का तर्पण भी देवतर्पण की रीति से चन्दन चावल युक्त पूर्व की ओर सव्य होकर करे; यथा—

ॐ मरीचिस्तृप्यताम् । ॐ अत्रिस्तृप्यताम् । ॐ अङ्गिरास्तृप्यताम् । ॐ पुलस्त्यस्तृप्यताम् । ॐ पुलहस्तृप्यताम् । ॐ क्रतुस्तृप्यताम् । ॐ प्रचेतास्तृप्यताम् । ॐ वशिष्ठस्तृप्यताम् । ॐ भृगुस्तृप्यताम् ॐ नारदस्तृप्यताम् ॥

अनन्तर जनेऊ को माला की भाँति (कण्ठोत्तरीय) करके *ऋषितीर्थ से दो दो अञ्जलि जल में जौ (यव) चन्दन मिला कर उत्तर की ओर मुंह कर देवे ।

† ॐ सनकस्तृप्यताम् २ । ॐ सनन्दनस्तृप्यताम् २ । ॐ सनातनस्तृप्यताम् २ । ॐ कपिलस्तृप्यताम् २ । ॐ आसुरिस्तृप्यताम् २ । ॐ वोढुस्तृप्यताम् २ । ॐ पंचशिखस्तृप्यताम् २ ।

अपसव्य अर्थात् दहिने कन्धे पर जनेऊ रख कर बांई जँघा

---

* ऋषितीर्थ अंगूठा और छोटी उंगली के मध्य भाग को कहते हैं ।

† जिन नामों के आगे दो का अंक है उनको दो दो अञ्जलि देवे । यह आचारादर्श और ब्राह्मण सर्वस्व के अनुसार लिखा गया है ।

को मोड़ कर पितृतीर्थ अर्थात् अंगूठे और पहिली अंगुली के मध्य उक्त विधि लेखानुसार तिल सहित जल वा केवल जल चन्दन से एक एक को तीन तीन बार दक्षिण की तरफ मुंह करके देवे; यथा—

यह ८ दिव्य पितर हैं

१ ॐ कव्यवाड़स्तृप्यतामिदं जलं* तस्मैस्वधा ३। ॐ नलस्तृप्यतामिदं जलं तस्मैस्वधा ३। ॐ सोमस्तृप्यतामिदं जलं तस्मैस्वधा ३। ॐ यमस्तृप्यतामिदं जलं तस्मैस्वधा ३। ॐ अर्यमातृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा ३। ॐ अग्निष्वात्तास्तृप्यन्तामिदं जलं तेभ्यः स्वधा ३। ॐ सोमपास्तृप्यन्तामिदं जलं तेभ्यः स्वधा ३। ॐ वर्हिषदस्तृप्यन्तामिदं जलं तेभ्यः स्वधा ३।

अनन्तर इन चौदह यमों को भी तीन २ अञ्जलि देवे— ॐ †यमाय नमः ३। ॐ धर्मराजाय नमः ३। ॐ मृत्यवे नमः ३। ॐ अन्तकाय नमः ३। ॐ वैवस्वताय नमः ३। ॐ कालाय नमः ३। ॐ सर्वभूतक्षयाय नमः ३। ॐ औदुम्बराय नमः ३। ॐ दध्नाय नमः ३। नीलाय नमः ३। ॐ परिमेष्ठिने नमः ३। ॐ वृकोदराय नमः ३। ॐ चित्राय नमः ३। ॐ चित्रगुप्ताय नमः ३। यहां तक जीवित पिता का पुत्र भी तर्पण कर सकता है उपरान्त नीचे लिखे हुए वाक्य से पितरों का

---

* तीर्थ तथा पितृ पक्ष में तर्पण करने के समय "इदं जलं" इसके आगे "सतिलं" यह पद हर एक वाक्य में जोड़ कर तर्पण करना चाहिये।

† मदन पारिजाते वृद्ध मनुना। दीपोत्सवं चतुर्दश्यां कार्यन्तु यमतर्पणम्। तर्पण प्रकारस्तु हेमाद्रौ। एकैकेन तिलैर्मिश्रैर्दद्यात् त्रीं त्रीं तिलाञ्जलीन्॥ सम्वत्सर कृतं पापं तत्क्षणादेव नश्यति॥

आवाहन करे; यथा मन्त्र—

आगच्छन्तु मे पितर इमं गृह्णन्त्वपोऽञ्जलिम् ।

अब जल हाथ में ले नीचे लिखे हुए मन्त्र और वाक्य को कह कर पहली अञ्जलि पिता को देवे फिर दूसरा मन्त्र और वाक्य कह कर दूसरी और इसी प्रकार तीसरा मन्त्र और वाक्य पढ़कर तीसरी अञ्जलि पिता को देवे। यथा मन्त्रः।

ॐ उदीरतामवर ऽउत्परास ऽउन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः। असुं यऽईयुरवृकाऽऋतज्ञास्तेनोवन्तु पितरोहवेषु। ॐ अद्य*..................गोत्रः अस्मत्पिता..................शर्मा वसुस्वरूपस्तृप्य तामिदंजलं† तस्मै स्वधा ॥१॥

(इतना पढ़ पहिली अञ्जलि पिता को देवे)

ॐ अङ्गिरसोनः पितरो नवग्वाऽअथर्वाणो भृगवःसोम्यासः॥ तेषां वयᳯ॰सुमतौयज्ञियाना-मपि भद्रे सौमनसे स्याम ॥१॥ ॐ अद्यगोत्रः

---

* अद्य शब्द के आगे गोत्र और पिता आदि सम्बन्ध वाचक शब्द के आगे जिसे जल देना हो उसका नाम शर्मा, बर्मा, गुप्ता आदि सहित तीनों वर्ण लिख लेवें।

† अगर पितृपक्ष वा तीर्थ हो तो जलं के आगे "सतिलं" जो,ना चाहिये।

..................अस्मत्पिता...............शर्म्मा वसुस्वरूपस्तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा ॥२॥

(इससे द्वितीय अञ्जलि पिता को देवे)

ॐ आयन्तुनः पितरः सोम्यासोग्निष्वात्ताःपथिभिर्देवयानैः ॥ अस्मिन् यज्ञेस्वधयामदन्तोधि ब्रुवन्तु ते वन्त्वस्मान् ॥ ॐ अद्य.......गोत्रः अस्मत्पिता............शर्म्मा वसुस्वरूपस्तृप्यतामिदं जलं तस्मैस्वधा ॥३॥

(इसे पढ़ तीसरी अञ्जलि पिता को देवे) इसीप्रकार तीन तीन मन्त्र और तीन तीन वाक्य कह कर तीन अञ्जलि पितामह (दादा) आदि को देवे; यथा मन्त्रः—

१—ॐ ऊर्जं वहन्तीरमृतं घृतं पयः कीलालं परिस्रुतम् ॥ स्वधास्थ तर्पयत मे पितॄन् ॥ ॐ अद्य.......गोत्रः अस्मत्पितामहः.....शर्मा रुद्रस्वरूपस्तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा ॥१॥

(इतना उच्चारण कर पहली अंजलि दादा को देवे)

२—ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः । पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः । प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः । अक्षन्न-

पितरोमोमदन्त पितरोतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम् ॥२॥ ॐ अद्यगोत्रः……… अस्मत् पितामहः……… शर्मा रुद्रस्वरूपस्तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा ॥२॥

(इतना कह दूसरी अंजलि दादा को देवे)

३—ॐ ये चेह पितरो ये च नेहयाँश्च विद्मयाँऽ उच न प्रविद्म । त्वं वेत्थ यतिते जात वेदः स्वधाभिर्यज्ञ ठं०सुकृतञ्जुषस्व ॥ ॐ अद्य गोत्रः …अस्मत् पितामहः……… शर्मारुद्रस्वरूप स्तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा ॥३॥

(इससे तीसरी अंजलि दादा को देवे)

इसी प्रकार परदादा को भी मन्त्र आदि से तीन अंजलि देवे; यथा—

१ ॐ मधुव्वाताऽऋताय ते मधुक्षरन्ति सिंधवः माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः ॥ ॐ अद्य……… गोत्रः अस्मत्प्रपितामह……… शर्मा आदित्यस्व-रूपस्तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा ॥१॥

(इतना पढ़ पहिली अंजलि परदादा को देवे)

ॐ मधुनक्तमुतोषसो मधुमत् पार्थिव ठं० रजः मधुद्यौरस्तु नः पिता ॥ ॐ अद्यगोत्र........ अस्मत्प्रपितामहः........शर्मा आदित्यस्वरूप स्तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा ॥

(इससे दूसरी अंजलि परदादा को देवे)

ॐ मधुमान् नो वनस्पतिर्मधुमां ऽअस्तुसूर्यः । माध्वीर्गावोभवन्तुनः ॥ ॐ अद्य गोत्रः........ अस्मत्प्रपितामहः................शर्मा आदित्य स्वरूप स्तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा ॥

(इतना कह तीसरी अंजलि देवे उपरान्त ॐ तृप्यध्वम् इसे तीन बार कह कर तीन अंजलि देवै)

ॐ अद्य गोत्रः .... अस्मन्माता........ दा गायत्री देवी तृप्यतामिदं जलं तस्यै स्वधा ॥ ३ ॥

(इतना कहकर माता को पहली और उसी प्रकार दूसरी व तीसरी भी अंजलि देवै)

ॐ अद्य गोत्रः........ अस्मत्पितामही........ दा सावित्री देवी तृप्यतामिदं जलं तस्यै स्वधा ॥ ३ बार ॥ ॐ अद्य गोत्रः.... अस्मत् प्रपितामही

(इतना कह दादी को एक अंजलि देवै) ॥ फिर

ॐ अद्यगोत्रः अस्मत्प्रपितामही ...... दा सरस्वतीदेवीतृप्यतामिदंजलंतस्यैस्वधा ॥ १ बार॥

(इसे कहकर परदादी को भी एक अंजलि देवे) ॥

ततः ॐ तृप्यध्वम्, तृप्यध्वम् तृप्यध्वम्, ।

तब नाना आदि का भी नमोवः इत्यादि मन्त्र पढ़ तीन अंजलि से तर्पण करे ॥ यथा मन्त्रः—

ॐ नमोवः पितरो रसाय नमोवः पितरः शोषाय नमोवः पितरो जीवाय नमोवः पितरः स्वधायै नमोवः पितरो घोराय नमोवः पितरो मन्यवे नमोवः पितरः पितरो नमोवो गृहान्नः पितरो दत्तसतोवः पितरो देष्मैतद्वः पितरो व्वासः ॥

ॐ अद्य गोत्रः ...... अस्मन्मातामहः शर्म्मा वसुस्वरूपस्तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा ॥३॥

इतना कहकर प्रथम अंजलि नाना को देवे फिर इसी प्रकार मंत्र आदि पढ़ कर दूसरी और तीसरी अंजलि भी नाना को देवे । आगे लिखे मन्त्र से परनाना को ३ अंजलि देवै ।

ॐनमोवः पितरो रसाय नमोवः पितरः शोषाय नमोवः पितरो जीवाय नमोवः पितरः स्वधायै

नमोवः पितरो घोराय नमोवः पितरो मन्यवे नमोवः पितरः पितरो नमोवो गृहान्नः पितरो दत्तसतोवः पितरो देष्मैतद्वः पितरोऽवासः ।

ॐ अद्य गोत्रः.......अस्मत्प्रमातामहः....शर्म्मा रुद्रस्वरूपस्तृप्यतामिदंजलं तस्मै स्वधा ॥ ३ ॥

इस मन्त्र से उक्त प्रकार तीन अंजलि परनाना को देवै ॥

ॐ नमोवः पितरो रसाय नमोवः पितरः शोषाय नमोवः पितरो जीवाय नमोवः पितरः स्वधायै नमोवः पितरो घोराय नमोवः पितरो मन्यवे नमोवः पितरः पितरो नमोवो गृहान्नः पितरो दत्तसतो वः पितरो देष्मै तद्वः पितरो वासः । ॐ अद्य गोत्रः............अस्मत् वृद्ध प्रमातामहः.........शर्म्मा आदित्यस्वरूप-स्तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा ॥ ३ ॥

इससे वृद्ध परनाना को तीन अंजलि देवे ॥

ॐ अद्यगोत्रः.......अस्मत् मातामही....दा गायत्री देवीतृप्यतामिदं जलं तस्यै स्वधा ॥ १ ॥

(इतना कह नानी को एक अंजलि देवे ॥)

ॐ अद्यगोत्रः·········अस्मत्प्रमातामही···दा सावित्री देवी तृप्यतामिदं जलं तस्यै स्वधा ॥१॥

(इतना कह परनानी को १ अंजलि देवे)

ॐ अद्यगोत्रः····अस्मत् वृद्धप्रमातामही···दा सरस्वतीदेवी तृप्यतामिदं जलं तस्यै स्वधा ॥१॥

(इतना कह सकल नानी को फिर एक अंजलि देवे)

*गुरू, पुरोहित, स्त्री, बेटा, ताऊ, चाचा, मामा, भाई, ताई, चाची, मामी, भावी, बुआ, बुआ का बेटा, मौसी का बेटा, बहन का बेटा, फूफा, मासड़, बहनोई, स्वसुर, शिष्य तथा और इष्टमित्रादिकों का गोत्र नाम कह कर तर्पण करना।

(आगे सव्य हो पूर्व की तरफ करना)

ॐ देवासुरास्तथा यक्षा नागा गंधर्व राक्षसाः ॥

पिशाचा गुह्यकाःसिद्धाःकूष्माण्डास्तरवःखगाः।१

जलेचरा भूमिलया वाय्वाहाराश्च जन्तवः।

तृप्तिमेते प्रयान्त्वाशु मद्दत्तेनाम्बुनाखिलाः ॥

---

* अस्मत्पत्नी, अस्मत्सुतः, अस्मत्पितृव्य आदि गोत्र तथा संबंध नाम वसुरूप आदि लगाकर तीन २ अंजलि तर्पण करना, यदि किसी आचार्य व चाचा आदि की स्त्री, पुत्र, न होंय तो "सपत्नीक ससुतः" ऐसा कहना, बुआ को पितुः स्वसा कहना पति पुत्र न होने पर सपतिः ससुतः बहिन को स्वसा कहना, बहनोई को भामः कहना फूफा को पितु भामः कहना ऐसे ही जहां जो आवश्यक हो वैसा कहना।

आगे अपसव्य होकर दक्षिण की तरफ ॥

ॐ नरकेषु समस्तेषु यातनासु च ये स्थिताः ।
तेषामाप्यायनायैतद्दीयते सलिलं मया ॥ ॐ ये
बान्धवाः बान्धवा ये ।ये ऽन्य जन्मनि बान्धवाः।
ते तृप्तिमखिलं यान्तु यश्चास्मत्तो भिवाञ्छति ॥
मातृवंशे मृता ये च पितृवंशे तथैव च ॥
गुरु श्वसुर बंधूनां ये चान्ये बांधवास्मृताः ॥
ये मे कुले लुप्तपिंडाः पुत्रदारविवर्जिताः ॥
तृप्यन्तु पितरः सर्वे मातृ मातामहादयः ॥
अतीतकुल कोटीनां सप्तद्वीपनिवासिनां ॥
आब्रह्मभुवनाल्लोकमिदमस्तु जलाञ्जलिम् ॥

पितृपक्ष और तीर्थ में (तिलाञ्जलिम्) कहना
ॐ तृप्यध्वम् । ॐ तृप्यध्वम् । ॐ तृप्यध्वम् ।

संतान की इच्छा करने वाला मनुष्य अपसव्य से ही भीष्म जी को ३ बार तर्पण नित्य करे ॥

वैयाघ्र पद्य गोत्राय सांकृति प्रवराय च । अपुत्राय ददाम्येतज्जलं भीष्माय वर्मणे ॥ ॥ नमस्कारः ॥
भीष्मः शान्तनवो वीरः सत्यवादी जितेन्द्रियः।
आभिरद्भिरवाप्नोतु पुत्र पौत्रोचितां क्रियाम् ॥

वसूनामवताराय शन्तनोरात्मजाय च। जलं (अर्घ्यं) ददामि भीष्माय आबालब्रह्मचारिणे ॥

इतना कहता हुआ जल देवे। फिर अंगोछे को चार तह कर आगे लिखे हुए श्लोकको पढ़कर अपने बाँईं तरफ निचोड़े यथा:—

ये के चास्मत् कुले जाता अपुत्रा गोत्रिणो मृताः
ते पिबन्तु मया दत्तं वस्त्रनिष्पीडनोदकम् ॥

उपरान्त सव्य हो ३ आचमन करके सूर्य को आगे लिखे हुए मन्त्र से ३ अर्घ्य देवे और प्रणाम करे—

ॐ नमो विवस्वते ब्रह्मन् भास्वते विष्णु तेजसे
जगत् सवित्रे शुचये नमस्ते कर्म्मदायिने ॥

सूर्य की प्रदक्षिणा करे

यानिकानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च।
तानि तानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिण पदे पदे ॥

ॐ. ग्रहाऽ ऊर्जाहुतयोव्यन्तो विप्राय मतिम् ।

---

* माघेमासि सिताष्टम्यां सतिलं भीष्म तर्पणम्। श्राद्धं च ये नराः कुर्युस्तेस्युः सन्तति भागिनः ॥इति॥ भारतेपि। शुक्लाष्टम्यांतुमाघस्य दद्याद्भीष्माययो जलम्। सम्वत्सर कृतं पापंतत्क्षणादेव नश्यति॥ धवलनिबन्धे स्मृतिः। अष्टम्यान्तु सिते पक्षे भीष्माय तुतिलोदकम्। अन्नं चविधिवद्दद्युःसर्वे वर्णा द्विजातयः॥ ॥ अत्र श्राद्धं काम्यम्॥ तर्पणन्तु नित्यम्। ब्राह्मणाद्याश्च ये वर्णा दद्यु भींष्माय नो जलम्। सम्वत्सर कृतं तेषां पुण्यंनश्यति सत्तम॥

तेषां विशिम्रियाणां वोहमिषमूर्ज ठं० समग्रभ-
मुपयामग्रहीतोसीन्द्रायत्वा जुष्टं गृह्ण्णाम्येषतेयो-
निरिन्द्रायत्वा जुष्टतमम् ॥

अथमत्स्य पुराणोक्त नवग्रहस्तोत्रम्

पद्मासनः पद्मकरः पद्मगर्भ समद्युतिः ।
सप्ताश्व सप्तरज्जुश्च द्विभुजः स्यात्सदारविः ।१।
श्वेतः श्वेताम्बर धरो दशाश्वः श्वेत भूषणः ।
गदा पाणिर्द्धिबाहुश्च कर्तव्यो वरदः शशी ।२।
रक्तमाल्याम्बरधरः शक्तिः शूल गदा धरः ।
चतुर्भुजो मेषगमो वरदः स्याद्धरासुतः ।३।
पीतमाल्याम्बर धरः कर्णिकारसमद्युतिः ।
खड्ग चर्मगदापाणिः सिंहस्थोवरदो बुधः ॥४॥
देवदैत्यगुरूतद्वत्पीतश्वेतौ चतुर्भुजौ ।
दंडिनौ वरदौ कार्यौ साक्ष सूत्र कमण्डलू ।५।
इन्द्रनीलद्युतिः शूली वरदो गृध्रवाहनः ।
बाण बाणासनधरः कर्तव्योर्क सुतः सदा ॥६॥
कराल वदनः खड्ग चर्म शूली वरप्रदाः ।
नीलः सिंहासनस्थश्च राहुरत्र प्रशस्यते ॥७॥

धूम्रोद्विबाहवः सर्वेगदिनो विकृताननाः ।
गृध्रासनगतानित्यं केतवः स्युर्वर प्रदा ॥८॥
सर्वे किरीटिनः कार्याग्रहा लोकहितावहाः ।
स्वांगुलेनोच्छ्रिताः सर्वेशतमष्टोत्तरं सदा । ६ ।
ब्रह्मासुरारिस्त्रिपुरान्तकारिः भानुः शशिः भूमिसुतो बुधश्च, ॥१॥
गुरुश्च शुक्रः शनि राहु केतवः सर्वे ग्रहाः शान्ति करामवन्तु ।

सूर्य को नमस्कार करना

ॐ आदित्याय नमस्कारं ये कुर्वन्ति दिने दिने ॥
जन्मान्तर सहस्रेषु दारिद्र्यं नोपजायते ॥इति॥

॥पितृ विसर्जनम् ॥

ॐ देवागातु विदोगातुं वित्वागातु मित ॥
मन सस्पत इमं देवयज्ञ ठं० स्वाहा वातेधाः ॥
कृतेनानेन तर्पणेन पितृरूपी जनार्दनःप्रीयताम् ॥
ततः प्रार्थना ॥यस्य स्मृत्याचनामोक्त्या तपोयज्ञ क्रियादिषु । न्यूनं संपूर्णतां यातु सद्यो वन्दे-तमच्युतम् ॥ प्रमादात्कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत् ॥ स्मरणादेवतद्विष्णोः संपूर्णं स्यादिति श्रुतिः । ॥ इति तर्पण विधिः ॥

अथ यजुर्वेदीय पारस्कर सूत्रोक्त

बलिवैश्वदेव प्रयोगः, ॥

पहले पृथ्वी में वित्ता (बिलस्त) सवावित्ते का चोकोना चक्र बनाकर उपरान्त उस चक्र के पास में एक कटोरी में जल* रखना और एक में अन्न रख दूसरे जल पात्र से आचमन कर पवित्र हो पवित्री पहिन संकल्प करना ॥ श्री विष्णुः ३ शुभे अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुक वासरे अमुक गोत्र अमुक नाम शर्म्माहं ममगृहे पंचसूना जनित सकल दोष परिहार पूर्वक नित्य कर्म्मानुष्ठान सिद्धि द्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं "बलि-वैश्व देवाख्यं" पंच महायज्ञं करिष्ये ॥ उस जल वाली कटोरी में वा अग्नि में देवयज्ञ सव्य होकर करना ॥

१ ॐ ब्रह्मणे स्वाहा इदं ब्रह्मणे नमम ।
२ ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये नमम ।
३ ॐ गृह्याभ्यः स्वाहा इदंगृह्याभ्यः नमम ।
४ ॐ कश्यपाय स्वाहा इदं कश्यपाय नमम ।
५ ॐ अनुमतये स्वाहा इदं अनुमतये नमम ।

॥ इति देव यज्ञः ॥

६ ॐ पर्जन्याय स्वाहा इदं पर्जन्याय नमम ।
७ ॐ पृथिव्यै स्वाहा । इदंपृथिव्यैनमम ८ ॐ अद्भ्यः स्वाहा इदं अद्भ्यो नमम । इन पांच स्वाहान्त मन्त्रों से पांच बार आहुति देना अंगूठा और उंगली को जलवाली कटोरी में "नमम" शब्द के आगे आहुति का शेष देना चाहिये और कोने

---

* साग्निक "बलिवैश्वदेव" अग्नि में होता है आहुती सब यही हैं। पहले कुंड में अग्नि स्थापन करके "पावक नाम" अग्नयेनमः इस नाम मंत्र से पूजन कर बाद में हवन करना। जो निरग्निक हैं उन्हें जल में करना चाहिये। रसोई में से अन्न लेकर वा चावल से ॥ संध्या तर्पण के बाद में करना चाहिये।

की तीन आहुतियां ६, ७। ८ चक्र के बाहर अंकों पर देना।

उपरान्त इसी जल पात्र के पास नीचे लिखे हुए चक्र के अनुसार पानी से चक्र, बनाकर और उस स्थान पर जल छिड़क के जिस स्थान पर जो जो लिखा है उसी नाम को उच्चारण कर उसी स्थान पर १७ आहुति देना १८वींदफे अपसव्य हो बांईं जंघा को मोड़ कर दक्षिण दिशा में (ॐ पितृभ्यः स्वधा नमः) इस मन्त्र से आहुत देना उपरान्त जिसमें से लेकर आहुति देते थे उस अन्नपात्र को धोकर १९ वायु कोण में (ॐ यद्मै तत्ते निर्णेजनं नमः) इस मन्त्र से अन्न आदि देना। ब्रह्म यज्ञ के अभाव में ३ वार गायत्री जप करना।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात् ॥

पृथ्वी पर जल से चौकोन मंडल बनाकर नीचे लिखी बलि करना।

(२) भूतयज्ञः सव्य होकर

१ ॐ धात्रे नमः इदं धात्रे नमम।
२ ॐ विधात्रे नमः इदं विधात्रे नमम।
३ ॐ वायवे नमः इदं वायवे नमम।
४ ॐ वायवे नमः इदं वायवे नमम।
५ ॐ वायवे नमः इदं वायवे नमम।
६ ॐ वायवे नमः इदं वायवे नमम।
७ ॐ प्राच्यै नमः इदं प्राच्यै नमम।
८ ॐ अवाच्यै नमः इदं अवाच्यै नमम।
९ ॐ प्रतीच्यै नमः इदं प्रतीच्यै नमम।
१० ॐ उदीच्यै नमः इदं उदीच्यै नमम।
११ ॐ ब्रह्मणे नमः इदं ब्रह्मणे नमम।

ईश | अग्नि

१ २
५ अग्नि
वा
४ जलपात्र ३

८
७
६

२, ३, १
पू०

जलपात्र

२०
१३
१० १७, १५, ११ १८ ८
उत्तर ६ १६, १४, ११ ४ दक्षिण
६
वायु १६ ५ नैऋत

पश्चिम

गी० अ० ३ श्लो० १३। यज्ञ से शेष बचे हुए अन्न को खाने वाले श्रेष्ठ पुरुष सब पापों से छूट जाते हैं। और पापी लोग अपने शरीर पोषण के लिये ही अन्न पचाते हैं वे पाप ही खाते हैं।
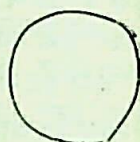
१२ ॐ अन्तरिक्षायनमः इदं अन्तरिक्षाय नमम ।
१३ ॐ सूर्याय नमः इदं सूर्याय नमम।
१४ ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः इदं विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमम ।
१५ ॐ विश्वेभ्यो भूतेभ्यो नमः इदं विश्वेभ्यो भूतेभ्यो नमम ।
१६ ॐ उषसे नमः इदं उषसे नमम ।

१७ ॐ भूतानां पतये नमः इदं भूतानांपतये नमम

(३) पितृ यज्ञः ❀ अपसव्य होकर बाँयां घोंटू नीचा करके दक्षिण को मुंह करके करना:—

१८ ॐ पितृभ्यः स्वधा नमः इदं पितृभ्यः स्वधा नमम।

निर्णेजनम् ❀ सव्य होकर पूर्व को मुंह करके:—

१६ ॐ यक्ष्मैतत्ते निर्णेजनम् नमः इदं यक्ष्मणे नमम।

तब और अन्न लेकर पवित्र भूमि में आगे लिखे हुए मन्त्रों से बलि देना सव्य होकर चक्र के बाहर। यथा—

गौ, कुत्ता, पतित, चाण्डाल, पापी, रोगी, कौए और कीटों के लिये धीरे से पृथ्वी में अन्नादि रख देना। गौ, कौआ और कुत्ते के लिये क्रम से तीन मन्त्र ये हैं यथा—

॥ गौ के लिये (सव्य होकर)

सौरभेय्यः सर्वहिताः पवित्राः पुण्यराशयः।
प्रतिगृह्णन्तु मे ग्रासं गावस्त्रैलोक्यमातरः॥१॥
सुरभिस्त्वं जगन्मात र्नित्यं विष्णु पदेस्थिता।
सर्वदेवमये ग्रासे मया दत्तमिदं ग्रस ॥२॥
इदमन्नं गवेनमः ॥ दोनों मन्त्रों से देना॥

॥ प्रर्थना ॥

सर्वदेवमये देवि ! सर्वदेवैरलंकृते ॥ मातर्ममा-
भिलषितं सफलं कुरु नन्दिनि ! ॥

॥ कौओं के लिये (कंठोत्तरीय) ॥ माला की तरह

ऐन्द्र वारुण वायव्या याम्या वैनैर्ऋतास्तथा ॥

वायसाः प्रतिगृह्णन्तु भूमावन्नं मयोज्झितम् ॥
इदमन्नं काकेभ्यो नमः ॥३॥

॥ कुत्ते के लिये (अपसव्य होकर) ॥

श्वानौ द्वौ श्यामशबलौ वैवस्वतकुलोद्भवौ ॥
ताभ्यामन्नं प्रदास्यामि स्यातामेतावहिंसकौ ॥
इदमन्नं श्वभ्यो नमः ॥४॥

सव्य होकर पूरब को मुंह करके ॥

देवा मनुष्याः पशवो वयांसि सिद्धाः सयक्षोर-गदैत्यसङ्घाः॥ प्रेताः पिशाचास्तरवः समस्ता ये चान्नमिच्छन्ति मया प्रदत्तम्॥५॥इदमन्नं देवा-दिभ्यो नमम॥ अपसव्यं ॥ पिपीलिकाः कीट-पतंगकाद्या बुभुक्षिताः कर्म निबन्धबद्धाः॥ तृप्त्यर्थमन्नंहि मया प्रदत्तं तेषामिदं ते मुदिता भवन्तु॥ इदमन्नं पिपीलिकादिभ्यो नमम ॥६॥ येषां न माता न पिता न बन्धुर्नैवान्नासिद्धिर्न तथान्नमस्ति ॥ तत्तृप्तयेन्नं भुवि दत्तमेतत्ते-यान्तु तृप्तिं मुदिता भवन्तु॥७॥ भूतानि सर्वाणि तथान्नमेतदहं च विष्णुर्नयतोन्यदस्ति॥ तस्मा-

दहं भूतनिकायभूत-मन्नं प्रयच्छामि भवाय तेषाम् ॥८॥ चतुर्दशो भूतगणो य एष तत्र स्थिता येऽखिलभूतसङ्घाः ॥ तृप्त्यर्थमन्नं हि मयाविसृष्टं तेषामिदं ते मुदिता भवन्तु ॥ इदमन्नं भूत गणेभ्यो नमम ॥६॥

तब आचमन कर श्रोत्रिय वेद पाठी आदि भिक्षार्थी को पैर धुलाकर गंध माला पहरावै तथा अन्न सामने रखकर वा अतिथी न मिलै तो १६ । ८ । ४ । ग्रास किसी पात्र वा पत्ते में रख कर । ओंहंततेन्नमिदं सनकादि मनुष्येभ्यः ॥ कहकर किसी को देकर भोजन करे ।

आदौ वृद्धौ क्षये चान्ते दर्शे मध्ये महालये ॥
एकोद्दिष्टे निवृत्ते तु वैश्वदेवो विधीयते ॥

यह क्रम जिनकी रसोई एक हो उनमें एक ही को करना चाहिये जो अलग रसोई होती हो तो पृथक् २ सबको अपने २ रसोई से करना चाहिये जैसा "छान्दोग परिशिष्ट" में लिखा है ।

एक पाके निवसतांपितृ देव द्विजार्चनम् ।
एकं भवेद्विभक्तानां तदैव स्याद्गृहे गृहे ॥

॥ इति बलिवैश्वदेवविधिः ॥

अकृतेवैश्वदेवेतुभिक्षौगृहसमागते । उद्धृत्यवैश्वदेवार्थंभिक्षां दत्वाविसर्जयेत् ॥ अनेन वैश्वदेवाख्येन कर्मणा श्री परमेश्वरः प्रीयताम् ॥

॥ अथ अन्नदान संकल्प विधिः ॥

श्राद्ध के संकल्प करने की विधि इस प्रकार है।

संकल्प करनेवाला संध्या करने के बाद आसन पर बैठकर पूर्वको मुंह करके पहले ३ आचमन करै ॐ केशवाय नमः ॐ माधवाय नमः ॐ हृषीकेशाय नमः। बाद में ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थांगतोपिवा। यः स्मरेत्पुंडरीकाक्षं सबाह्याभ्यंतरः शुचिः अब आसन शुद्धि के लिये विनियोग॥ ॐ पृथ्वीतिमंत्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्म्मो देवता आसनोपवेशने विनियोगः॥ ॐ पृथ्वी त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्॥ अत्र प्राणायाम करै॥ इसके बाद पवित्री धारण करना दो कुशा की पवित्री सीधे हाथ की छोटी उँगली के पास वाली में तीन कुशा वाली पवित्री वाम हाथ की उसी उंगली में पहिरे २ कुशालंबी आसन के नीचे एक २ कुशा दोनों पैरों के नीचे १ चुटिया में १ जनेऊ में अगर चुटिया न हो तो अंगोछे में बांध लेना और मोटक हाथ में लेकर जल में डोब कर संकल्प की पत्तल पर जो सामने* रखी है उस पर छिड़के मंत्र वही "अपवित्रः" आदि बाद में अपने पिता आदि का ध्यान करै सव्यं "ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एवच॥ नमः स्वाहायै।स्वधायै नित्यमेव नमोनमः॥ इसको ३ बार बोलना॥ ॐ सप्तव्याधा दशार्णेषु मृगाः कालिंजरे गिरौ। चक्रवाकाः शरद्वीपे हंसाः सरसि मानसे॥ तेपि जाताः कुरुक्षेत्रे ब्राह्मणाः वेदपारगाः। प्रस्थिता दीर्घमध्वानं यूयं किमवसीदथ॥ अपसव्यम्॥ पंचक्रोशं गयाक्षेत्रं क्रोशमेकं गयाशिरः। यत्र यत्र स्मरिष्यामि पितृणां (मातृणां) दत्तमक्षयं॥ श्राद्धारंभे गयां ध्यात्वा ध्यात्वा देवं गदाधरम्॥ स्वान्पितॄन् (मातृः) मनसा ध्यात्वा ततः श्राद्धं समारभेत॥ सव्यम्॥†

---

* पितृकर्म में अपसव्य होकर। † पितृ कर्म में स्वधा।

विश्वेदेवाओं का अन्न परिवेषण करे अर्थात् अपने बांये हाथ के ऊपर कैंची की तरह सीधा हाथ रख कर यह मंत्र बोलता हुआ अन्न के ऊपर पात्र को छूता हुआ ढकै। ॐ पृथ्वी ते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखे अमृते अमृतं जुहोमि स्वाहा। इदं विष्णुर्विचक्रमेत्रे धानिदधे पदम्। समूढ़मस्य पाठं सुरे स्वाहा विष्णोहव्यरठंॅ रक्ष (इदमन्नम्) बोलकर सीधे हाथ का अंगूठा अन्न से लगावै (इदमापः) इसे बोलकर पानी से अंगूठा लगावे (इदमाज्यम्) इसे कह कर फिर अन्न से अंगूठा लगावे (एतत्सर्वंहविः ※) इसको बोलकर बांये हाथ से अन्न-पात्र को स्पर्श करता हुआ अन्न के चारों तरफ सीधे हाथ से जौं† लेकर प्रदक्षिणा‡ विधि से गेरे॥

॥ प्रथम विश्वेदेवा के लिये अन्न का संकल्पः॥

दाहिने हाथ में दक्षिणा जल कुशा लेकर बाम हाथ अन्न से लगाकर ॐ स्वस्ति श्री मुकुन्द सच्चिदानन्दस्य ब्रह्मणो द्वितीय परार्द्धे एक पंचाशत्तमे वर्षे प्रथममासे प्रथमपक्षे प्रथम दिवसे, अह्नो द्वितीये यामे तृतीये मुहुर्ते रथन्तरादि द्वात्रिंशत्कल्पानां मध्ये॥ अष्टमे श्री श्वेतवराहकल्पे स्वायंभुवादिमन्वन्तराणां मध्ये सप्तमे वैवस्वत मन्वन्तरे कृत त्रेताद्वापर कलि संज्ञानां चतुर्युगानां मध्ये वर्तमाने अष्टाविंशतितमे कलियुगे तत्प्रथम चरणे तथा पंचाशत्कोटियोजन विस्तीर्ण भूमडलान्तर्गत सप्तद्वीप मध्यवर्तिनि जंबूद्वीपे तत्रापि नवखंडानां मध्ये नव-सहस्रयोजन-विस्तीर्णे भरतखंडे तत्रापि परमपवित्रे भारतेवर्षे॥ आर्यावर्तान्तरगत ब्रह्मावर्तैकदेशे कुमारिकाक्षेत्रे मथुरामंडले+ रेणुका-

---

※ कविः माता के श्राद्ध में मातः बोलना पिता के श्राद्ध में पितः। † तिल। ‡ मंडल का नाम। + वामा वर्त उल्टी परिक्रमा। —क्षेत्र नाम कविः।

समीपक्षेत्रे—श्री गंगा यमुनयोः पश्चिमे तटे नर्मदाया उत्तरे तटे देव ब्राह्मणानां संनिधौ ॥ श्री मन्नृपति विक्रमादित्य राज्यातीत अमुक संख्या परिमिते प्रवर्तमान संवत्सरे प्रभवादि षष्ठि संवत्सराणां मध्ये अमुकनाम संवत्सरे अमुकायने अमुकगोले अमुकर्तौ अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशिस्थे सूर्ये अमुकराशिस्थे देवगुरौ अमुकराशिस्थे चन्द्रे शेषेषु ग्रहेषु यथा यथा राशिस्थान स्थितेषु सत्सु ॥ एवं ग्रहगणविशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ अमुकगोत्रो अमुक नाम शर्म्माहं (अपसव्यम् पातित वामजानुः दक्षिणाभिमुखः) अमुक गोत्राणां अस्मत्पितृपितामह प्रपितामहानां अमुकामुकशर्मणां वसुरुद्रादित्य स्वरूपाणां अपत्नीकसपत्नीकानां अमुक गोत्र (स्य) अस्मत्पितः (तुः) अमुकनामशर्मन् (शर्मणः) वसु स्वरूप (स्य) महालयान्तरगत अपरपक्ष निमितक सकल्पात्मक ❀ (सव्यं) पार्वण श्राद्ध सम्बन्धिनः एतद्योन्नं घृताद्यु पस्कर सहितं पात्रे उपनीतं उपनेष्यमाणं निषिद्ध वर्जितञ्च विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम्वो नमः ॥

❀ अपसव्यं पार्वण श्राद्धे एतद्योन्नं घृताद्यु पस्कर सहितं पात्रे उपनीतं उपनेष्यमाणं निषिद्धवर्जितञ्च (यथा संख्याकं) ब्राह्मण भोजन तृप्ति पर्यन्तं ते स्वधानमः ॥सव्यम्॥

अद्य गोत्र अमुक शर्म्मणः अस्मत्पितुःश्राद्धे इदमन्नं गवेनमः स्थानम् ६० पृष्ठे प्रार्थना।

अद्य गोत्र अमुकशर्म्मणः अस्मत्पितुः श्राद्धे (कंठीकृत्वा) इदमन्नं वायसेभ्यो नमः ॥ ऋषितीर्थेनत्यागः प्रार्थनापृष्ठे ६० ॥

एवं (अपसव्यो भूत्वा) इदमन्नं श्वभ्यांनमः प्रार्थनापृष्ठे ॥६०॥ इदमन्नंपिपीलिकादिभ्योनमम पृ० ६० ततोऽपव्येन जल गृहीत्वा ॥

अद्य दिने दीयमानं आमान्नं पक्वान्न विशिष्टंभ्यः स्त्री पुरुषे,

। अथ तीर्थ श्राद्ध प्रयोगः ।

तीर्थश्राद्धं प्रकुर्वीतपक्वान्ननविशेषतः ॥ आमान्नेन हिरण्येन कन्द मूलफलैरपि ॥ १ ॥ पिण्डासनं पिण्ड-दानं पुनः प्रत्यवनेजनम् । दक्षिणा चान्न सङ्कल्पः तीर्थश्राद्धेष्वयंविधिः ॥ २ ॥ अर्घ्यमावाहनं चैव द्विजां-गुष्ठ निवेशनम् ॥ विकरन्तृप्तिप्रश्नञ्च तीर्थे पञ्च विवर्जयेत् ॥ ३ ॥ आचम्य, प्राणानायम्य ॥ओं पृथ्वीतिमं० ६॥ पृष्ठे विनियोगः ॥ ओं ६ पृष्ठे पृथ्वीत्वया०॥ पवित्रीधारणम् ॥ द्वौदर्भौ दक्षि० ४१ पृष्ठे-पवित्रेस्थोवै०-४१ पृष्ठे ॥ संकल्पः ॥ तिथिवाराद्युच्चार्य अमुकतीर्थे ॥ अपसव्यम् ॥ अमुकगोत्राणां अस्मत्पितृ पितामह प्रपितामहानां अमुका-मुकशर्मणां वसुरुद्रादित्य स्वरूपाणां (अपत्नीक) सपत्नी-कानां सैकोदिष्टानां तथा अमुक गोत्राणां अस्मन्मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहानां अमुकामुकशर्मणां अग्नि वरुण

भ्योवालकुमार दीनानाथेभ्यश्च आत्माहार पत्न्याहार वर्जितं यद्दत्तं यद्दास्यमानं तत्पितृभ्य उपतिष्ठतु ॥ सव्यम् ॥ ॐ ईशान विष्णु कमलासन कार्तिकेय वन्हित्रयार्क रजनीश गणेश्वराणां क्रौंचाम-रेन्द्र सततं भुवि काश्यपानां पादान्नमामिसततं पितृ (मातृ) मुक्ति हेतवे ॥ १ ॥ ब्राह्मणों के हाथ पैर धोकर गंध (चंदन), अक्षत, पुष्प से पूजन करके भोजन करावे । बाद में दक्षिणा फल देवे और प्रार्थना करे । शेषमन्नं किं क्रियताम् ॥ इसका उत्तर ब्राह्मण दें ॥ इष्टैः सहभुज्यताम् । क्षयाह में एकोद्दिष्ट और पार्वण दोनों विधान हैं । जैसा जहाँ क्रम हो वैसा कर लें ।

प्रजापति स्वरूपाणां (अपत्नीक) सपत्नीकानां सैकोद्दिष्टानां तीर्थश्राद्ध करणे (सव्यम्) विष्णु पूजन पूर्वकं अमुक तीर्थे तीर्थ श्राद्धमहंकरिष्ये ।। यथोपचारैः विष्णु पूजनं विधाय ।। अनयाविष्णु पूजनया तीर्थ श्राद्धकरणे अधिकारोस्तु ।। चरणोदकं कुर्यात् ।।ओं अपवित्रः ८ पृष्ठे।। अपसव्यम् दक्षिणाभिमुखोभूत्वा " सप्तव्याधा दशार्णेषु मृगाः कालंजरे गिरौ तेपिजःताकुरुक्षेत्रे ० ६३ पृष्ठे।। तीर्थ श्राद्धोपहाराणां पवित्रतास्तु।। मधुव्वाता ऋतायते०४७-४८ पृष्ठे ।।मधु ३।। अत्राद्य गोत्राणां अस्मत् पितृपितामह प्रपितामहानां अमुकामुक शर्म्मणां वसुरुद्रा दित्य स्वरूपाणां सैकोद्दिष्टानां (अपत्नाक) सपत्नीकानां तथा गोत्राणां अस्मन्मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहानां अमुकामुक शर्म्मणां अग्नि वरुण प्रजापति स्वरूपाणां सैकोद्दिष्टानां समुद्धारार्थं वैकुंठ (गोलोक) प्राप्त्यर्थं अमुक तीर्थे तीर्थ श्राद्धमहंकरिष्ये ।। स्ववामे कर्मपात्र करणम् ।। स्थण्डिलंकृत्वा वेदीं निर्माय ।। ॐ अपहता रक्षाꣳसिव्वेदिषदः इति षड वा तिस्रो रेखा कुर्यात् ।। ओं येरूपाणि प्रतिमुञ्चमानाः असुरः सन्तः स्वधया चरन्ति ।। ये पुरोनिपुरो ये भरन्त्यग्निष्टां लोके प्रणुदात्यस्मात् ।। इति उल्मुक धारणम् ।। छिन्न मूल कुशास्तरणम् ।। अवनेजनम् ।। तिथिवाराद्युच्चार्य० अद्य गोत्राणां० तीर्थ श्राद्धे पिंडासनोपरि त्रेधा

(षोढ़ा) विभज्य पुष्पमर्घ्यं स्वधा ।। पिण्डदानम् ।। गोत्र अस्मत्पितः शर्मन् वसु स्वरूप तीर्थ श्राद्धे एष ते पिण्डः स्वधा ।। एवं पितामहाय प्रपितामहाय मातामहादिभ्योऽपि देयम् ।।

तिथि वाराद्युच्चार्य तीर्थे पिण्डोपरि प्रत्यवनेनिच्वते स्वधा ।। पिण्ड पूजनम्, वस्त्र, यज्ञोपवीत, गन्ध, पुष्प, तिलाक्षत, धूप, दीप, नैवेद्य, ताँबूल, पूंगीफल, दक्षिणादि अत्रावनिक्ष्वतेस्वधा ।। जलदुग्ध धारा ।। ऊँ नमोवः पितरो० ४६ पृष्ठ पिण्ड पूजनम् परिपूर्णमस्तु ।। अस्तु ।।

सव्यम् ।। ईशान विष्णु कमलासन कार्तिकेय वह्नित्रयार्क रजनीश गणेश्वराणाँ क्रौंचामरेन्द्र कलशोद्भव काश्यपानां पादान्नमामि सततं पितृ मुक्ति हेत वे ।। सुप्रोक्षितमस्तु ।। अपसव्यम् ।। अस्य तीर्थ श्राद्धस्य समृद्धयर्थं यथा सम्पन्नानेन तृप्तिपर्यन्तेन भोजनेन ब्राह्मणमेकमहंतर्पयिष्ये । तेन पितृ मातृ मातामहाश्रेयो ऽस्तु ।।सव्यं।। दक्षिणाः पान्तु पितरः प्रीयन्तामिति ब्रूयात् शान्तिदाः पुष्टिदाः भवन्तु ।। आशिषः प्रति गृह्यताम् ।। गोत्रन्नोवर्द्धतामिति ।। अपसव्यम् ।। क्षमध्वं क्षमस्व स्वर्गं गच्छंत संचरसम्युदय ।। सव्यम् ।। स्वस्तिभवन्तो ब्रुवन्तु ।। स्वस्ति ।। अस्य तीर्थ श्राद्ध करणे यन्यूनं यदतिरिक्तं तत्सर्वं भवतां प्रसादात् विष्णोः प्रसादाच्च सर्वं परिपूर्णमस्तु ।। अस्तु परिपूर्णम् ।। यस्यस्मृत्याच ५६ पृ० ।।

आयुः प्रजां धनं विद्यां स्वर्गं मोक्षं सुखानि च ॥ प्रय-च्छन्तु महाराज्यं प्रीतास्तुभ्यं पितामहाः ॥ इत्याशिषः सत्याः सन्तु अस्तु ॥ भूयसी दक्षिणादानम् । गोचारिणी दक्षिणा दानम् । आचार्य दक्षिणादानम् ॥ पितृ मातृ महेभ्यो नमः ॥ प्रमादात्कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु-यत् । स्मरणादेवतद्विष्णोःसम्पूर्णंस्यादिति श्रुतिः ॥ यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु । न्यूनं संपूर्णतामेति सद्यो वन्दे तमच्युतम् ॥ षोडशदानानि ॥

भूमिरासनपानीय गन्ध दीपान्न वस्त्रकम् । ताम्बूलं फल पुष्पञ्च छत्रं रजत काञ्चनम् ॥ शय्या गोपादुका चेति क्रमाद्दानानि षोड़शः ॥ ॥ इति तीर्थ श्राद्ध विधिः समाप्त ॥

गुरूपादुका मन्त्रः ॥

ओं अस्य श्री गुरुपादुका मन्त्रस्य ब्रह्माऋषिर्गा-यत्री छन्दः श्री गुरुर्देवता ऐं बीजं ह्रीं शक्तिः श्रीं कीलकं श्री गुरुप्रसाद सिद्ध्यर्थे जपेविनियोगः ॥ ओं ब्रह्मणे ऋषये नमः शिरसि । ओं गायत्री छन्दसे नमः मुखे ॥ ओं श्री गुरु देवताभ्यो नमः हृदि ॥ ओं ऐं बी-जाय नमः नाभौ ॥ ओं ह्रीं शक्तये नमः आधारे ॥ ओं विनियोगाय नमः पादयोः ॥ ओं ऐं ह्रीं श्रीं गुँ गुरुभ्यो नमः सर्वाङ्गे ॥ बीजमन्त्रेण षडंगन्यासः ॥ मानसोपचारैः पूजयेत् ॥ ध्यानम् ॥ सहस्रदल पंकजेसकलशीत रश्मिप्रभं ।

वराभयकराम्बुजंविमलगंध माल्याम्बरं । प्रसन्न वदनेक्षणां सकल देवता रूपिणाम् ॥ प्रातः प्रभृति सायान्तं सायादि प्रातरेवच ॥ यत्करोमि जगन्नाथ तदस्तु तव पूजनम् ॥ मन्त्रः ॥ ओं ऐं ह्रीं श्रीं गुँ गुरुभ्यो नमः ॥ पंचमुद्राः प्रदर्श्य दशधा प्रजप्य प्राणायामादिन्यासं कृत्वा प्रणम्य गुह्यातिगुह्य गोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् । सिद्धि-र्भवतु मे देव त्वत्प्रसादान्महेश्वर ॥

उच्छिष्ट गणेश मन्त्रः ॥

ओं अस्यश्रीउच्छिष्ट गणेश मन्त्रस्य कङ्कोल-ऋषिः विराट् छन्दः उच्छिष्ट विनायक देवता चतुर्वर्ग-फलावाप्तये जपे विनियोगः ॥ अथ ऋष्यादिन्यासः ॥ ओं कङ्कोल ऋषये नमः शिरसि ॥ ओं विराट् छन्दसे नमः मुखे ॥ ओं उच्छिष्ट विनायकाय नमो हृदि ॥ कर षडङ्ग न्यासः ॥ ओं गां अंगुष्ठाभ्यां नमः, हृदयायनमः ॥ ओं गीं तर्जनीभ्यांनमः, शिरसेस्वाहा ॥ ओं गूं मध्यमाभ्यांनमः, शिखायैवषट् ॥ ओं गैं अनामिकाभ्यां नमः, कवचायहुँ ॥ ओं गौं कवचायहुँ, नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ओं गः करतल करपृष्ठाभ्यांनमः, अस्त्राय फट् ॥ एवं हृदयादि ॥ पञ्चांग-न्यासः ॥ ओंहस्तिहृदयायनमः ॥ ओं पिशाचिशिरसेस्वाहा ॥ ओं लिखे शिखायैवषट् ॥ ओं स्वाहा कवचायहुँ ॥ ओं हस्ति-पिशाचि लिखे स्वाहा अस्त्रायफट् ॥ ओं लं पृथिव्यात्मकं

गंधं विलेपयामि नमः ॥ ओं हं आकाशात्मकं पुष्पाणि समर्पयामि नमः ॥ ओं यं वाय्वात्मकं धूपमाघ्रापयामि नमः ॥ ओं रं वह्न्यात्मकं दीपं दर्शयामि नमः ॥ ओं वं अमृतात्मकं नैवेद्यं निवेदयामि नमः ॥ ओं सं सोमात्मकं ताम्बूलं समर्पयामि नमः ॥ मानसोपचारैः सम्पूज्य गणेशमुद्रां प्रदर्श्य ॥

गणेश मुद्रा विधान

मुखात्प्रलम्बितं हस्तंकृत्वा सङ्कुचितांगुलिम् । मध्य-तर्जनिगताग्रांगुष्ठं चाधस्थ मध्यमम् । कुर्यान्मुद्रा गणेशस्य प्रोक्तोयं सर्व सिद्धिदा ॥ ध्यानम् ॥

ओं चतुर्भुजं रक्ततनुं त्रिनेत्रं पाशाङ्कुशौ मोदकपात्र दन्तौ ॥ करैर्दधानं सरसीरुहस्थमुन्मत्तमुच्छिष्टगणेशमीडे ॥१॥ अंकुश मोदकपात्रे दक्षयोः ॥ पाश दन्तौ वामे ॥ हस्ति पिशाचि लिखे स्वाहा ॥ इतिमूलमन्त्रः पाठान्तरम् । हस्तिपिशाचिलिखे स्वाहा ॥

अपने हाथ के अँगूठे के बराबर अर्थात् ४ अंगुल की मूर्ति लाल चन्दन वा सफ़ेद अर्क की बना कर पूजा करके जप करने से इष्ट सिद्धि होती है। नैवेद्य पदार्थ को मुँह में रखकर मन्त्र जपै बाद में बलि दे ॥ गं, हं, क्लौं, ग्लौं उच्छिष्ट गणेशाय महायक्षायायं बलिः । तत्त्व मुद्रा से जल छोड़े । २ तरंग, ३ श्लो० मं० म०

श्री गणेशाय नमः ॥ अथ पञ्चदशी यन्त्र पद्धतिः प्रारम्भः ।

श्री महादेवजी ने पार्वती से कहा हे देवि ! मैंने सब यन्त्र मन्त्र कील दिये हैं केवल यह पञ्चदशी (१५) यन्त्र विना कीला रहने दिया है। परम गोपनीय है। सो मैं तुझ से कहता हूँ। तू भी गुप्त रखना। लंपट, अभक्त और दुष्ट को यह यन्त्र मत देना। यह यन्त्र विना कीला और प्रसिद्ध है चित्त लगाय कर सुन। नदी के तट पर सुन्दर पेड़ लगे हुए होंय वहाँ पर एक कोठरी उत्तम गोवर मट्टी से लिपवाकर अष्टगन्ध से एक बहुत बड़ा बीज मन्त्र पृथ्वी पर लिखै तिसका पूर्व दिशा को ओर मुंह करे और माथे पर अर्द्ध चन्द्र अनुस्वार लिखे। तथा अष्टगन्ध से ही पृथ्वि पर १५ का यन्त्र लिखना चाहिये। और उसके ऊपर दीपक सुवर्ण, चांदी, ताम्र, लोहा तथा मट्टी का उसमें भी १५ का यन्त्र लिख देना चाहिये। उसको गाय के शुद्ध घी से भर कर उस में लाल सूत की बत्ती १०००, तथा १०८ तार, १८ तार वा १२ तार की दिये में बलाना और इस दिये के चारों ओर ४ दिया तेल के भर कर बलाना पूर्व विधि से तदनन्तर बीच में लाल कपड़े का आसन बिछा कर यन्त्र लिखने वाला बैठे यदि क्रूर कार्य करना चाहै तो सूर्य स्वर में स्वास

खींचना और दक्षिण तीन पांव पूर्व सामा के उत्तर सामा आगे रखै बाद में आसन पर पूर्व दिशा दीपक के सामने बैठना। लाल धोती, लाल वस्त्र, और लाल ही आसन जिस में और रंग का कोई तार न होवे। आसन पर बैठकर माया बीज ह्रीं का जप करता रहे, और यन्त्र भरता रहे। अष्ट गन्ध से यन्त्र लिखे। तथा जो अपना कार्य हो सो यन्त्र के ऊपर लिखता रहै दिन प्रति ५०। १००। ३००। ५०० तथा १००० जितना पहले दिन लिखै उसी प्रकार नित्य लिखै। तथा माया बीज के पेट में यन्त्र के अक्षर लिखै। उसकी विधि इस प्रकार है। एक अंक से लिखे केशर से एक लक्ष (लाख) तो हनूमानजी प्रगट होय दर्शन दें, इसी प्रकार नित्य लिखना और एक-एक यन्त्र को अलग २ काटकर गेहूँ के आटे में गोली बना कर मछलियों को खिलाना तालाब बावडी वा कुए में जहाँ होंय। मछली गोली खांय तो कार्य सिद्धि अवश्य हो। यदि न खांय तो कार्य न होगा यन्त्र लिखना बन्द कर दे। गोली मछलियों को खाने के लिये गेरे तब भी माया बीज का जप करता रहे। जब १ लक्ष यन्त्र पूरा होवे तब दशांश मैवा का हवन पानी में करे अग्नि में नहीं (जिस प्रकार बलिवैश्व होता है)

बीज मन्त्र स्वाहान्त बोल कर जल में छोड़ना। तदनन्तर दशांश तर्पण, मार्जन, गोदान आदि करना। प्रथम १ से लिख कर ९ तक लिखै तो हनूमानजी दर्शन दें; २ से प्रारंभ कर ९ तक लिख पीछे १ लिखै राज वश्य हो इसी प्रकार ३ से प्रारंभ कर बाद में १।२ लिखे व्यापार में वृद्धि हो। ४ से प्रारंभ कर ९ तक लिखे बाद में १।२।३ लिखे साध्य का उच्चाटन क्रोधादि नष्ट होंय। ५ से प्रारंभ कर बाद में १।२।३।४ लिखे साध्य का स्थान भ्रष्ट हो। ६ से प्रारंभ कर ९ तक लिखे बाद में १।२।३।४।५ लिखे मारण न होय। ७ से प्रारंभ कर ९ तक बाद में १।२।३।४।५।६ लिखे वश्य सिद्धि होय। ८ नौ पहिले लिख कर एक से प्रारंभ करै तो अशुभ चिन्तकों को विपत्ति होय। ९ से प्रारंभ कर के बाद में आठ तक लिखे अवश्य धन वृद्धि हो। इस प्रकार यन्त्र अष्टगन्ध से ८ अंगुल प्रमाण चमेली की कलम से १००००० प्रमाण लिख ९ कोठे में। द्वि, नंद, वेद, ऋषि, बाण, त्रि, षट्, शशि, वसु, यदि माया बीज का साधन न बनै तो माया बीज बिना ही अष्ट गन्ध से लिखना सवालक्ष १ से ९ पर्यन्त। यदि दीपक आदि सामान न हो सकै तो भी माया बीज का जप अवश्य करता जाय और पूर्वोक्त विधि से गोली बनाकर मछलियों

मं० मेष	पूर्व, चर	६	१	८
सू० सिंह	,, स्थिर आतशी	७	५	३
वृ० धन	,, दुः स्वभाव	२	९	४

शुक्र वृष	दक्षिण, स्थिर	४	३	८
बुध कन्या	,, खाकी दुःस्वभाव	९	५	१
शनि मकर	,, चर	२	७	६

बुध मिथुन	पश्चिम दुःस्वभाव	४	९	२
शुक्र तुला	,, चर वादी	३	५	७
शनि कुँभ	,, स्थिर	८	१	६

चं० कर्क	उत्तर चर	८	३	४
मं० वृश्चिक	,, आवी स्थिर	१	५	९
गुरु मीन	,, दुः स्वभाव	६	७	२

को देता रहेगा तो भी कार्य सिद्ध होगा।

यन्त्र लिखकर पर्वत के शिखर पर चढ़ कर उड़ावै तो उच्चाटन सिद्ध हो। पृथ्वी पर खड़िया से लिखे बंदी छूटे। ब्रह्मचर्य से रहे। हविष्यान्न भोजन करे॥ स्त्र कामना यंत्र के ऊपर लिखे। गोली को मछली जल्दी खांय तो यन्त्र लिखे, न खांय तो न लिखे॥ अष्ट गन्ध॥ चंदन, अगर, जटामाँसी (बालछड़), देवदारु, कूट, केशर, नेत्र-बाला, हाऊत्रेर (खस) अतिरिक्त इसके महावर, केशर से लिखे त्रिपुर सुन्दरी के प्रयोग में लिखा है।

१५ यंत्र की दूसरी–संयम विधि।

शुभ कार्य को शुभ दिन तथा क्रूर कार्य को क्रूर दिन से प्रारम्भ करै और लिखकर नदी में बहा दिया करे और जो यन्त्र न बहै उसको लेकर अपने पास रखे सर्व कार्य सिद्धि करे। यन्त्र की गिनती संकल्प कर ले जिस कार्य को किया चाहै सिद्धि होय। २००० दो हज़ार लिखै लक्ष्मी प्रसन्न होय। ६००० छै हज़ार लिखै निरोगी होय। १०००ं एक सहस्र लिखै सरस्वती प्रसन्न होय। १००० लिखै औषधि सिद्ध होय। २००० दो सहस्र लिख मन्त्र यन्त्र सिद्ध होय। ४००० लिखै ईश्वर प्रसन्न होय। ३००० लिखै बैरी प्रसन्न होय। ६००० लिखै तिज़ारी जाय। ६००० लिखे गई वस्तु पावे। ५०००

लिखे देव प्रसन्न होय। २००० लिखे दुःख नाश और सुख होय। ४००० लिखे उद्यम लगे। २००० लिखे शत्रु वश्य होय। ३००० लिखे वश्य होय। २००० लिखे सभा मोहन होय। ६००० लिखे मद मोचन होय। २००० लिख विदेशी घर आवै। २००० लिखे खेती उत्तम होय। १० यन्त्र से विष नाश होय। ५००० लिखे वंध्या गर्भवती होय। ३००० लिखे मित्र मिले। ४००० लिखे राजा प्रसन्न होय। १५००० लिखे चित्त की इच्छा पूर्ण होय। यन्त्र लिखकर जल में बहावे सिद्ध होय। जो कामना होय तो आटे में गोली बनाय मछलियों को खिलावे सर्व कार्य सिद्ध होंय।

यन्त्र लेखन विधिः

शुभ कारज को उत्तर मुँह करके लिखे। तथा अशुभ को दक्षिण मुख करके लिखना।

अथ यन्त्र लेखन विधिः।

स्त्री संग न करे ब्रह्मचर्य से रहै। यन्त्र लिखने से पहिले मन्त्र जपै १००००० एक लक्ष ॐ ह्रीं क्लीं स्वाहा। मोहनार्थ १० यन्त्र नित्य लिखे। २० आकर्षण को। तीस जय के लिये। १०००० कार्य सिद्धि के लिये। स्वर्ण लेखनी और असली महावर से लिखे मोहन होय। गोलोचन से लिखे रूपे की कलम से आकर्षण

होय। चांदी की कलम हलदी से स्तम्भन होय। सोने की लेखनी और केशर से लिखे देवदर्शन होय। कनक रसाक्त काकपक्ष लेखनी से संहार होय। शवभस्म लोह लेखनी से द्रुत गमन होय॥ ब्रण वृक्ष का रस लौह लेखनी से द्वेष होय। चन्दन दूर्वा से लिखे उत्पात शान्ति होय॥ कलम का प्रमाण ८ अंगुल। वंदी मोचनार्थ १०००० लिखे २००००० लिखे राज प्राप्त होय। ३००००० लिखे वंश वृद्धि होय। ४००००० लिखे स्राप वरदान देने की शक्ति हों। ५००००० लिखे वाक् सिद्ध हो। २००००० लिखे गतराज्य प्राप्त होय। ३०००० पृथ्वी में लिखे वंश वृद्धि होय। ४००००। ५०००० सर्वसिद्धि हो, मोहन हो। ४००००० लिखे राजवशी व जल में न डूबै। ७०००० लिखे लक्ष्मी-रति होय। ८००००० अष्ट सिद्ध प्राप्ति होय। ९००००० लिखे नवनिधि प्राप्त होय। १००००० लिखे महादेव समान होय॥ नित्य प्रति ११। २५। ३३ वा ५० लिखे अथवा १०० लिखे। ब्राह्मण भोज-पत्र पै। क्षत्री ताड़-पत्र पर। वैश्य कागद पर और शूद्र पृथ्वी पर लिखे। लाल आसन, लाल कपड़ा पहरे पृथ्वी में सोवै जौ भोजन करै या मूंग चावल यावत् यन्त्र लिखै। इति १५ के यंत्र की विधी॥

॥ अथ स्वप्नेश्वरी मन्त्रः ॥

ॐ अस्य श्री स्वप्नेश्वरीमंत्रस्यउपमन्युऋषिः बृहती छन्दः स्वप्नेश्वरी देवताममाभीष्टसिद्धये जपे निनियोगः॥

ॐ श्रीं हृद्, स्वप्नेश्वरि शिरसि, कार्यं शिखा, मे कवचं, वद नेत्र त्रयाय वौषट् , स्वाहा अस्त्रायफट्॥

मानसोपचारैः सम्पूज्य ॥

॥ ध्यानम् ॥

वराभये पद्मयुगं दधानां करैश्चतुर्भिः कनकासन-स्थाम् । सिताम्बरां शारद चन्द्र कान्तिं स्वप्नेश्वरीं नौमि विभूषणाढ्याम् ॥ मूलं, ॐ श्रीं स्वप्नेश्वरि कार्यं मे वद स्वाहा ॥ मन्त्र महोदधौ त० ७ श्लो० ६० ॥

१२५००० जपने से स्वप्न द्वारा कार्याकार्य की सिद्धि दृष्टि होगी ।

वगलामुखी प्रयोग विधिः ॥

ॐ अस्य श्री वगलामुखी मन्त्रस्यनारदऋषिः बृहती छन्दः स्तंभनास्त्र चिन्मयी वगलामुखी देवता ह्लीं बीजं स्वाहा शक्तिः ममाभीष्ट सिद्धये जपे विनियोगः॥ ऋष्यादि-न्यास करके कर षड़ङ्ग न्यास करना ॥

मन्त्र महोदधौ १० त०

ॐ ह्लीं अंगुष्ठाभ्यां नमः (हृदयायनमः) ॥ ॐ वगलामुखि तर्जनीभ्यां नमः (शिरसे स्वाहा) ॥ ॐ सर्व दुष्टानां मध्यमाभ्यांनमः (शिखायैवषट्) ॥ ॐ वाचं मुखं

पदं स्तम्भय अनामिकाभ्यां नमः (कवचायहुँ) ॥ ॐ जिह्वां कीलय कनिष्ठकाभ्यां नमः (नेत्रत्रयायषवौट्) ॐ बुद्धिं विनासय ह्लीं ॐ स्वाहा करतल करपृष्ठाभ्यां (अस्त्रायफट्) पुनः वगला पंजर न्यास करना ।

वगलापूर्वतो रक्षेदाग्नेय्यां च गदाधारी पीताम्बरा दक्षिणे च स्तंभिनी चैव नैर्ऋतौ ॥ जिह्वां कीलिन्यथो रक्षेत्पश्चिमे सर्वदा मम ॥ वायव्ये च सुधोन्मत्ता कौवेरी चत्रिशूलिनी । ब्रह्मास्त्र देवता पातु ऐशान्ये सततं मम ॥ सर्वतो सततं रक्षेत् पाताले स्तब्धमातरः ॥ ऊर्ध्वंरक्षे-न्महादेवी जिह्वास्तंभनकारिणी ॥ एवं दशदिशो रक्षे-द्वगला सर्व सिद्धिदा ॥ एवंन्यास विधिंकृत्वायत्किञ्चिज्ज-पमाचेरत् ॥ तस्याः संस्मरणादेव शत्रूणां स्तम्भनं भवेत् ॥ मानसोपचारैः संपूज्य ॥ ध्यानम् ॥

ॐ सौवर्णासनसंस्थितां त्रिनयनां पीतांशुकोल्ला-सिनीम् ॥ हेमाभाङ्ग रुचिं शशाङ्क मुकुटां सच्चंपकस्रग्-युताम् ॥ हस्तैर्मुद्गरपाशवज्ररसनाः संबिभ्रतीं भूषण-व्याप्ताङ्गींवगलामुखीं त्रिजगतां संस्तंभिनीं चिन्तयेत् ॥

द्विभुजावगला ध्यानम् ॥

जिह्वाग्रमादाय करेणदेवीं वामेन शत्रून्परि पीडय-न्तीम् । गदाभिघातेन च दक्षिणेन पीताम्बराढ्यां द्विभुजां नमामि ॥

मुद्गर, गदा, पाश, वज्र मुद्राः प्रदर्श्य जपंकुर्यात् ॥

मू० ॐ ह्लीं वगलामुखि सर्व दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलयबुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा ॥

ॐ गुह्याति गुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपं । सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि ॥ कुवेर मन्त्रः ॥

ॐ अस्यश्री धनद कुवेर मन्त्रस्य विश्रवामुनि ऋषिः वृहती छन्दः शिव मित्र धनेश्वर देवता ममाभीष्ठ सिद्धये जपे विनियोगः ॥ मं० म० १६ तरङ्गें, ११२ श्लो० ॥

करषडङ्गन्यासौ ॥

ॐ यक्षाय अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ (हृदयाय नमः) । ॐ कुवेराय तर्जनीभ्यां नमः ॥ (शिरसे स्वाहा) । ॐ वैश्रवणाव मध्यमाभ्यां नमः । (शिखायै वषट्) ॐ धनधान्याधिपतये अनामिकाभ्यां नमः ॥ (कवचायहुम्) ॐ धनधान्य समृद्धिं मे कनिष्ठकाभ्यां नमः ॥ (नेत्र-त्रयाय वौषट्) ॥ ॐ देहि दापय स्वाहा ॥ करतल कर-पृष्ठाभ्यांफट् ॥ (अस्त्रायफट्)॥ मानसोपचारैः सम्पूज्य ॥

॥ ध्यानम् ॥

ॐ मनुजवाह्य विमानवर स्थितं गरुडरत्ननिभं निधि-नायकम् । शिवसखं मुकुटादि विभूषितं वरगदे दधतं भज तुंदिलम् ॥ मूलम् ॥ यक्षाय कुवेराय वैश्रवणाय धन धान्याधिपतये धनधान्य समृद्धिं मे देहि दायय स्वाहा ॥

१२५००० जपे, दशाँश हवन तर्पण मार्जन आदि करना ॥

व्यापार द्वारा धन प्राप्ति का मन्त्र ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं क्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मी ममगृहे धन पूरय २ चिन्ता दूरय २ स्वाहा ॥ विधि ॥

प्रातःकाल स्नान करके १०८ मंत्र नित्य जपे धन लाभ होगा ॥

लक्ष्मी मन्त्रः ।

ॐ अस्य श्री सप्तविंशत्यक्षर सर्व समृद्धि करण रमा मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः गायत्री छन्दः श्री महालक्ष्मीर्देवता श्रीं बीजं ह्रीं शक्तिः प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ॥

ऋष्यादिन्यासः ॥

ॐ ब्रह्मर्षये नमः शिरसि । ॐ गायत्री छन्दसे नमः मुखे । ॐ श्री महालक्ष्मी देवतायै नमो हृदि । ॐ श्रीं बीजाय नमोगुह्ये । ॐ ह्रीं शक्तये नमः पादयोः ॥

मूलेनकरौ प्रमृज्य ॥

करपञ्चाङ्ग न्यासौ ॥

श्रीं ह्रीं श्रीं कमले श्रीं ह्रीं श्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः (हृदयाय नमः)॥ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये श्रीं ह्रीं श्रीं तर्जनीभ्यां नमः (शिर से स्वाहा) ॥ श्रीं ह्रीं श्रीं प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं मध्यमाभ्यां नमः (शिखायैवषट्) ॥ श्रीं ह्रीं श्रीं प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं अनामिकाभ्यां नमः (कवचाय

हुँ) ॥ श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै श्रीं ह्रीं श्रीं करतल करपृष्ठाभ्यां नमः अस्त्राय फट् ॥

मानसोपचारैस्सम्पूज्य ॥

ध्यानम् ॥

सिन्दूरारुण कान्तिमब्जवसतिं सौन्दर्य वारांनिधिम् । कोटीराङ्गदहारकुण्डलकटीसूत्रादिभिर्भूषिताम् ॥ हस्ताब्जैर्वसुपात्रमब्जयुगलादर्शौ। वहन्तींपरामावीतां परिचारिकाभिरनिशं ध्यायेत्प्रियां शार्ङ्गिणः ॥१॥

मन्त्रः ॥

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः ॥ १२५००० जप से दशांश हवनादिक करै मन्त्र सिद्ध होने से धन प्राप्ति होवे ॥

यन्त्र और आवरण पूजन शारदा तन्त्र में देखना।

शारदायां ८ पटले १४४ श्लोक ॥

अथ द्वादशाक्षरी हनुमत्प्रयोगः ॥

ॐ अस्य श्री द्वादशाक्षरी हनुमन्मन्त्रस्य रामचन्द्र ऋषिः जगतीछन्दः हनुमान् देवता ह्सौं बीजं ह्स्फ्रें शक्तिः ममाभीष्ट सिद्धये जपे विनियोगः ॥ ऋष्यादि न्यासः ॥ ॐ रामचन्द्र ऋषये नमः शिरसि ॥ ॐ जगती छन्द से नमः मुखे ॥ ॐ ह्सौं बीजाय नमो गुह्ये । ॐ ह्स्फ्रें शक्तये नमः पादयोः ॥

करषडङ्गन्यासौ ॥

ह्रौं अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ (हृदयाय नमः) ह्स्फ्रें तर्जनीभ्यां नमः ॥ (शिर से स्वाहा) । ख्फ्रें मध्यमाभ्यां नमः (शिखायैवषट्) ह्स्त्रौं अनामिकाभ्यां नमः (कवचायहुँ) ह्स्ख्फ्रें कनिष्ठकाभ्यां नमः (नेत्रत्रयायवौषट्) ह्सौं करतल करपृष्ठाभ्यां नमः (अस्त्रायफट्) ॥

अक्षर न्यासः

ह्रौं मूर्द्धनि । ह्स्फ्रें भाले । ख्फ्रें नेत्रयोः । ह्स्त्रौं मुखे । ह्स्ख्फ्रें कंठे । ह्सौं बाह्वोः । ह्रौं हृदि । ह्स्फ्रें कुक्षौ ख्फ्रें नाभौ । ह्स्त्रौं लिंगे । ह्स्ख्फ्रें जान्वोः । ह्सौं । पादयोः ।

अथ पदन्यासः ॥

हनुमते नमः शिरसि । हनुमते नमः भाले । हनुमते नमः मुखे । हनुमते नमः हृदि । हनुमते नमः नाभौ । हनुमते नमः ऊर्वोः । हनुमते नमः जंघयोः । हनुमते नमः पादयोः ॥

मानसोपचारैः पूजयेत् ॥

वालार्कायुत तेजसं त्रिभुवनं प्रक्षोभकं सुन्दरं सुग्रीवादि समस्त वानरगणैः संसेव्य पादाम्बुजम् । नादेनैव समस्तराक्षस गणान् संत्रासयन्तं प्रभुं श्रीमद्रामपदाम्बुजं स्मृतिरतं ध्यायामि वातात्मजम् ॥

मूलम् ॥

ह्रौं ह्स्फ्रें ख्फ्रें ह्स्रौं ह्स्ख्फ्रें ह्सौं हनुमते नमः ॥

गुह्यातिगुह्य गोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपं । सिद्धिर्भवतु मे देव ! त्वत्प्रसादान्महेश्वर ॥ मं० म० त० १३

स्वामी वश्यकरी शत्रु विध्वंसिनी ॥

ॐ अस्य श्री स्वामी वश्यकरी शत्रु विध्वंसिनी स्तोत्र मन्त्रस्य पिप्पलायन ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः श्रीरामचन्द्रो देवता मम स्वामी प्रीत्यर्थं मत्सकाशाच्छत्रोः पिशाचवत्पलायनार्थे जपे विनियोगः ॥ ऋष्यादिन्यास करने के बाद ॥ ॐ रां अंगुष्ठाभ्यां नमः । ॐ रीं तर्जनीभ्यां नमः । ॐ रूं मध्यमाभ्यां नमः । ॐ रैं अनामिकाभ्यां नमः ॐ रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ॐ रः अस्त्राय फट् ॥ एवं हृदयादि ॥

॥ ध्यानम् ॥

ॐ कालाम्भोधर कान्तिकाय मनसं वीरासनाध्यासितं मुद्रा ज्ञानमयीं दधानमपरां हस्ताम्बुजे जानुनी ॥ सीतां पार्श्व गतां शिरोरुहकरां विद्युन्निभंराघवं पश्यन्तीं मुकुटं गदादि विविधं कल्पोज्ज्वलांगीं भजे ॥ एवं ध्यात्वा जपेत् ॥ विभीषण उवाच ॥ ॐ स्वामीवश्यकरी देवी प्रीति वृद्धि करी मम ॥ शत्रु विध्वंसिनी रौद्री त्रिशिरासा त्रिलोचनी ॥ अग्निज्वाला रौद्रमुखी घोर दंष्ट्रा त्रिशूलिनी ॥१॥ दिगंम्बरीं मुक्तकेशी रक्त पाणिर्महोदरी ॥२॥ एक राड् वैष्णवी

घोरे शत्रु मुद्दिश्यते विषम् । अस्तु मुद्दिश्य पीयूषं प्रसादा-दस्तु ते सदा ॥३॥ मन्त्रमेतज्जपेन्नित्यं विजयं शत्रु नाशनं । स्वामी प्रीत्याभिवृद्धिर्हि जराात्तस्य न संशयः ॥४॥ सहस्रं त्रितयं कृत्वा कार्य सिद्धिर्भविष्यति । जपाद्दशांशतो होमः सर्षपैस्तन्दुलैः घृतैः ॥५॥ पञ्चखाद्ययुतैर्हुत्वा स्वामी वश्यकरी तथा ॥ ब्राह्मणान्भोजयेत्पश्चादात्माभीष्ट फल प्रदः ॥ इति स्वामी वश्यकरी शत्रु विध्वंसिनी स्तोत्रम् ॥

वटुक मन्त्र विधान ॥

ॐ अस्य श्री आपदुद्धार वटुक मंत्रस्य बृहदारण्यक ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः भैरवो देवता वं बीजं ह्रीं शक्तिः ममाभीष्ठ सिद्धये जपे विनियोगः ॥ ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ बृहदारण्यक ऋषये नमः शिरसि । ॐअनुष्टुप्छन्द से नमो मुखे । ॐ भैरव देवतायै नमो हृदि । ॐ वं बीजाय नमो गुह्ये । ॐ ह्रीं शक्तये नमः पादयोः ॥

ॐ ह्रां वां अंगुष्ठाभ्यांनमः ॥ (हृदयाय नमः) ॥ ॐ ह्रीं वीं तर्जनीभ्यां स्वाहा (शिर से स्वाहा) ॐ ह्रूं वूं मध्यमाभ्यां वषट् ॥ (शिखायै वषट्) ॐ ह्रैं वैं अना-मिकाभ्यां हुम् ॥ (कवचायहुम्) ॐ ह्रौं वौं कनिष्ठकाभ्यां वौषट् ॥ (नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ॐ ह्रः वः करतलकर पृष्ठाभ्यां-फट्) ॥ अस्त्रायफट्) ॥

मानसोपचारैः सम्पूज्य ॥

ध्यानम् ॥

कर कलित कपालः कुण्डली दंडपाणी तरुण तिमिर नील व्याल यज्ञोपवीती । क्रतु समय सपर्याविघ्नविच्छेद हेतुर्जयति वटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम् ॥

मू० ॐ ह्रीं वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीं ॥ पूर्व में १२५००० जपे ॥

प्रथम कांस्य पात्र में सिन्दूर का चौका लगावे उसमें त्रिकोण यन्त्र लिखे जैसा छपा है । भीतर अक्षर लिखे संकल्प करके आवाहनादि करके षोडशोपचार वा यथोपचार पूजन करे अथवा गन्ध-पुष्प-धूप-दीप और नैवेद्य से पूजन करे। तथा यन्त्र के पास नीचे लिखा
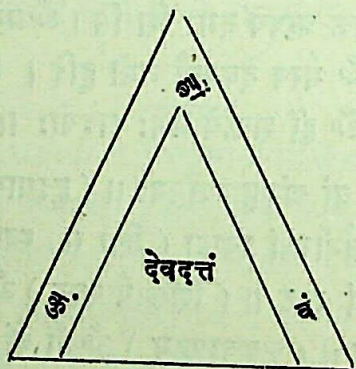
सामान रखे । उर्द की दाल के बड़े तिलों के तेल में सिके हुए दही में मिला सिंदूर लगाकर ।

कच्चा दूध गुड़ मिला हुआ। भुना हुआ केला बुगती का लड्डू और इमरती। लाल कनेर वा गुड़हल के फूल से पूजन नित्य करे रात्रि के ६ बजे बाद से प्रातःकाल ३ बजे तक जप करे और दशांश घी, असली शहत और चीनी का हवन करे ११ दिन में कार्य सिद्ध होगा वा दुगुना तिगुना अथवा चौगुना करे।

इति वटुक मन्त्र विधान विशेष विधि "शारदा तिलक" ग्रन्थ के २० पटल में है॥

॥ भैरवाष्टक स्तोत्र ॥

ॐ यं यं यं यक्ष रूपं दश दिशि वदनं भूमि कंपायमानम्। सं सं संहार मूर्तिं शिर मुकुट जटा शेखरं चन्द्र विम्बम्॥ दं दं दं दीर्घ कायं विकृत नख मुखं ऊर्ध्वरोमं करालं। पं पं पं पाप नाशं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालम्॥१
ॐ रं रं रं रक्तवर्णं कट कटित तनुं तीक्ष्ण दंष्ट्राकरालं। घं घं घं घोष घोषं घघ घघ घटितं घर्घरा घोरनादम्॥ कं कं कं काल रूपं धिग धिग धगितं ज्वालितं काम देहं। दं दं दं दिव्य देहं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालम्॥२॥
ॐ लं लं लं लंवदन्तं लल लल लुलितं दीर्घ जिह्वा करालं। धूं धूं धूं धूम्र वर्णं स्फुट विकृत मुखं भासुरं भीमरूपम्॥ रुं रुं रुं रुण्ड मालं रुधिर मय मुखं ताम्रनेत्रं

विशालम् । नं नं नं नग्न रूपं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालम् ॥३॥ ॐ वं वं वं वायु वेगं प्रलय परिमितं ब्रह्मरूपस्वरूपम् । खं खं खं खड्ग हस्तं त्रिभुवन निलयं भास्करं भीमरूपम् ॥ चं चं चं चालयंतं चल चल चलितं चालितं भूत चक्रम् । मं मं मं मायरूपं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालम् ॥४॥ ॐ शं शं शं शंख हस्तं शशिकर धवलं यक्षसम्पूर्ण तेजम् । मं मं मं माय मायं कुलमकुल कुलं मन्त्रमूर्ति स्वतत्वम् ॥ भं भं भं भूतनाथं किलकिलित वचश्चारु गृह्णालुलंतं । अं अं अं अन्तरिक्षं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालम् ॥५॥ ॐ खं खं खड्ग भेदं विषममृतमयं काल कालान्धकारम् । क्षीं क्षीं क्षीं क्षिप्रवेगं दह दह दहनं नेत्र संदीप्यमानम् । हूं हूं हूं हूंकार शब्दं प्रकटित गहनं गर्जितं भूमिकम्पं । वं वं वं वाल लीला प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालम् ॥६॥ ॐ सं सं सं सिद्धि योगं सकल गुणमयं देव देवं प्रसन्नम् । पं पं पं पद्मनाभं हरिहर वरदं चन्द्र सूर्याग्नि नेत्रम् ॥ जं जं जं यक्षनाथं सतत भयहरंसर्व देवस्वरूपम् । रौं रौं रौं रौद्र रूपं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालम् ॥७॥ ॐ हं हं हं हंसघोषं हसित कहकहा रावरौद्राट्टहासम् । यं यं यं यक्ष सुप्तं शिर कनक महा वद्धखट्वांग नाशम् ॥ रं रं रं रंग रंगं प्रहसित वदनं पिंगकस्याश्मशानम् । सं सं सं सिद्धनाथं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालम् ॥८॥

ॐ आं ह्रीं क्रों अन्नस्थ भैरव क्षेत्रपाल आगच्छागच्छ इदमर्घ्यं पाद्यं, पुष्पं, धूपं, चरु बलिं स्वस्तिकं यज्ञ भागे च यज्ञामहे प्रतिगृह्यताम् स्वाहा ॥ एवं पूर्वाद्यष्टदिक्षु ॥
एवं यो भावयुक्तं प्रपठति च यतः भैरवस्याष्टकं हि।
निर्विघ्नं दुःख नाशं असुर भयहरं शाकिनीनां विनाशं ॥
दस्युर्न व्याघ्र सर्पः धृति विहसि सदा राजशत्रोस्तथाज्ञात्।
सर्वे नश्यन्ति दूराद्ग्रह गणविषमाश्चिंचतिताश्चेष्टसिद्धिः॥६॥
इति विश्वसारोद्धारे क्षेत्रपाल भैरवाष्टक स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ मंत्र बुखार के दूर करने का ॥

गंगाया उत्तरे कूले कुमुदो नाम वानरः।
तस्य स्मरण मात्रेण गतः ह्येकाह्यको ज्वरः ॥

ज्वर, शीत पूर्व वा ताप पूर्व १।२ ३ वा नित्य आता हो इस मंत्र को उतनी ही संख्या पीपल के पत्ते पर स्याही से लिख धूप देकर गले में बाँधे बुखार निश्चय जायगा।

॥ सद्यः प्रसन्ना होने का मन्त्र ॥

गंगा तीरे वसेत्काकी चरते च हिमालये ॥
तस्याः पक्षच्युतं तोयं पाययेच्चैव तत्क्षणात् ॥
ततः प्रसूयते नारी काकरुद्रो वचो यथा ॥

स्वास को रोक कर जितनी बार यह मन्त्र जपा जाय गुड़, वा गरम जल अभिमन्त्रित करके खिलाने पिलाने से बालक होगा और पीड़ा शान्त होगी ॥

॥ ज्वर नाशन मन्त्र ॥

श्रीकृष्णः बलभद्रश्च प्रद्युम्न अनिरुद्ध च।
ऊषा स्मरण मात्रेण ज्वर व्याधी विमुच्यते ॥

कागज़ पर लिख कर धूप देकर गले में बाँधे ज्वर नाश होवे। वा इसको विशेष जपने से भी हर प्रकार का ज्वर नाश होता है।

हर प्रकार की बाधा दूर करने को मोरपंख से झाड़ा दे। ॐ नमः वीर वजू हनुमन्त रामदूत चलवेग चल लोहे की गदा वजू का सोटा पान का बीड़ा तेल सिंदूर की पूजा हं हं हंकार पवनकुमार काल चं चं चं चक्र हस्त भैरव कील चामुंडा कील मसान कील देव कील दैत्य कील दानव कील राक्षस कील डाकिनी कील शाकनी कील बारै जात बाघ कील नव कोट नाग कील छलछिद्र भेद कील भोंदरा भोंधरा कील ५२ वीर कील बारै जात बाघ कील डाइं अचल चला पृथ्वी कील कलसिंह कील अप-घात करे उलट ताके ऊपर परे खंक खंक खाय २ स्वाहा ॥ इस प्रयोग को शनिवार रात्रि के समय हनुमान की पूजन करके १०८ जपै और मोर पंख पर फूंक मार के हनुमान जी के ऊपर झाड़ा दे इसी प्रकार सात ७ शनि पर्यन्त करे बाद में जिस बालक के ऊपर नज़र मसान आदि का दोष होय मोरछल से झाड़ा देवे मन्त्र ऊपर लिखा है ११ बार बोले सर्वानन्द होंगे हनुमान का भोग बाँटे ॥ इस

प्रयोग से रोजगार न करे धर्मार्थ करे।

मंत्र के १० संस्कार

पहले जनन संस्कार का यन्त्र ताड़पत्र व भोजपत्र पर अष्टगन्ध से वा लाल चन्दन से लिखकर पूजन करके १० संस्कार करना। जो आगे लिखे हैं।

१ दीपन॥ हंसः मूलम् सोहं। १ सहस्र जपने से मंत्र का दीपन संस्कार होता है।

बोधन॥ हूँ मूलम् हूँ। ५ सहस्र जपने से बोधन संस्कार होता है।

३ ताड़न॥ फट् मूलम् फट्। १ सहस्र जपने से ताड़न संस्कार होता है।

४ अभिषेक। मन्त्र को ताड़पत्र पर लिखकर ऐं हंसः ॐ इससे १ सहस्रवार जल को अभिमंत्रित करके ताड़पत्र पर अभिषेक करना।

६ विमली करण॥ ॐ त्रों वषट् मूलं ॐ त्रों वषट् सहस्र जपने से विमली करण होगा।

७ जीवन॥ वषट् स्वधा मूलं वषट् स्वधा १ सहस्र जपने से जीवन संस्कार होता है।

८ तर्पण॥ दूध, घी, जल में मिलाकर ताड़पत्र पर लिखे हुए मंत्र के ऊपर १ सहस्रवार गिराने से तर्पण होता है।

९ गोपन॥ ह्रीं मूलं ह्रीं एक सहस्र जपने से गोपन होता है॥ १० आप्यायन॥ ह्सौः मूलं ह्सौः॥ एक

सहस्र जपने से आप्यायन होता है। जनन संस्कार का यंत्र पहले दिया जा चुका है।

यह १० संस्कार करने से मन्त्र के सब दोष दूर होते हैं ॥ मन्त्र महो दधौ २४ त० ११८ श्लो० ॥

शीतलास्तोत्र

स्कन्दउवाच ॥ भगवन्देवदेवेशशीतलायाः स्तवं-शुभम् ॥ वक्तुमर्हस्यशेषेण विस्फोटकभयापहम् ॥ १ ॥

ईश्वर उवाच ॥ वन्देहंशीतलांदेवीं सर्वरोगभया-पहम् ॥ यमासाद्यनिवर्तेतविस्फोटक भयंमहत् ॥ २ ॥ शीतले२ चेतियोब्रूयाद्दाहपीड़ितः ॥ विस्फोटकभयंघोरं-क्षिप्रंतस्य विनस्यति ॥ ३ ॥ यस्त्वामुदकमध्येतुधृत्वा संपूजयेन्नरः ॥ विस्फोटकभयंघोरं कुलेतस्यनजायते ॥ ४ ॥ शीतलेतनुजान्रोगान्नृणांहरसिदुस्तरान् ॥ विस्फोटकविशी-र्णानांत्वमेकामृत वर्षिणी ॥ ५ ॥ गलगण्ड ग्रहारोगाये-चान्ये दारुणानृणाम् । त्वदनुध्यानमात्रेण शीतलेयान्ति-संक्षयम् ॥ ६ ॥ नमंत्रं नौषधंकिंचित् पापरोगस्यविद्यते ॥ त्वमेका शीतले धात्रिनान्यांपश्यामि देवताम् ॥ ७ ॥ मृणालतन्तु सदृशी नाभिहृन्मध्यसंस्थिताम् ॥ यस्त्वांविचि-न्तयेद्देवितस्यमृत्युर्नजायते ॥ ८ ॥ श्रोतव्यं पठितव्यंवैन-रैर्भक्ति समन्वितैः ॥ उपसर्गविनाशार्थं परंस्वस्त्ययनं महत् ॥ ९ ॥ शीतलाष्टकमेतद्धिनदेयंयस्य कस्यचित् ॥ किन्तुतस्मै प्रदातव्यं भक्तिश्रद्धान्वितश्चयः ॥ १० ॥

शीतलेत्वंजगन्माता शीतलेत्वंजगत्पिता ॥ शीतलेत्व-
जगद्धात्री शीतलायैनमोनमः ॥ इतिस्कन्दपुराणोक्तंशीत-
लाष्टकं संपूर्णम् ॥

शुक्रोपासित मृतसंजीवनी विद्या।

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं त्र्यम्बकं यजामहे भर्गो देवस्य धीमहि सुगन्धिं पुष्टि वर्द्धनम् धियोयोनः प्रचोदयात् उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् । अन्य प्रकार मृत-संजीवनी विद्या ॥ ॐ जूँसः (अमुकं) मां जीवय पालय ॥

ध्यानम्

स्वच्छं स्वच्छारविन्दस्थितमुभयकरे संस्थितौ पूर्णकुम्भौ । द्वाभ्यामेणाक्षमाले निजकरकमले द्वौ घटौ नित्य-पूर्णौ । द्वाभ्यान्तौ च श्रवन्तौ शिरसि शशिकला चामृतैः प्लावयन्तम् । देहं देवोदधानो विदिशतुविशदां कल्पकालं श्रियं नः ।

शीतला का उपचार ।

यन्त्र शीतला वाले के गले में बाँधे भोजपत्र पर लिखकर ।

१४८	१५२	१४७
०५४१	६४१	८४१
१४१	१५५	१४६

शीतला में खाट की पाटी से बाँधे भोजपत्र पर लिखे ।

६१	२	१५
४१	१	०१
११	१६६	११

ॐ अस्य श्री शीतला मन्त्रस्य उपमन्यु ऋषिः बृहती

छन्दः श्री शीतला देवता विस्फोटक शान्त्यर्थे जपे विनियोगः ॥

ऋष्यादिन्यासः ॥

ॐ उपमन्यु ऋषये नमः शिरसि । ॐ बृहती छन्द से नमोमुखे । ॐ श्रं शीतलादेवतायै नमो हृदि । ॐ विस्फोटक शान्त्यर्थे जपेविनियोगाय नमः सर्वाङ्गे । मूलेनकरौप्रमृज्य ॥ करषड्ङ्गन्यासौ ॥ ॐ हां श्रां अंगुष्ठाभ्यां (हृदयाय) नमः । ॐ हीं श्रीं तर्जनीभ्यां (शिरसे) स्वाहा । ॐ हूं श्रूं मध्यमाभ्यां (शिखायै) वषट् । ॐ हैं श्रैं अनामिकाभ्यां (कवचाय) हुम् । ॐ हौं श्रौं कनिष्ठकाभ्यां (नेत्रत्रयाय) वौषट् ॐ हः श्रः करतल करपृष्ठाभ्यां (अस्त्रायफट्) ॥

ध्यानम् ॥

दिग्वास सम्मार्जनिकां च सूर्पं करद्वये संदधतीं घनाभाम् ॥ श्री शीतलां सर्व रुजार्तिनाशां रक्ताङ्गरागस्रजमर्चयामि ।.१॥ इति ध्यात्वा मानसोपचारै स्संम्पूज्य १२५००० सपाद लक्षं जपेत् दशांशं पायसेन जुहुयात् ॥ मू० ॐ हीं श्रीं शीतलायै नमः ॥ स्फोटानां पीड़ा नश्यतीति ॥ मं० म० ७ तरंगे ५६ श्लोकः ॥

प्रयोग करने के बाद नाभि मात्र जल में खड़ा होकर १ सहस्र मन्त्र से जल भिमन्त्रित कर बुहारी से शीतला के फफोलों पर मार्जन करने से तत्काल आराम होगा ॥

॥ शिव, और शक्ति, माला विधान योगिनी तन्त्र २ पटले ॥

करमाला महेशानि शिवशक्ति क्रमेण च । शृणुष्व परमेशानि सर्व तन्त्र प्रसिद्धये ॥ अनामा मध्यमारभ्य कनिष्ठादित एवच ॥ तर्जनी मूलपर्यन्तं प्रजपेद्दशपर्वभिः ॥ मध्यमाया मूल पर्व मेरुत्वेन समाचरेत् ॥ अष्टोत्तरं जपेद्देवि आद्यन्तद्वितयं त्यजेत् ॥ शिवमालासमाख्याता शक्तिमालां शृणुष्व मे ॥ अनामामध्यमारभ्य कनिष्ठादि क्रमेण च ॥ तर्जनी मूलपर्यन्तं प्रजपेद्दशपर्वसु ॥ मध्यम द्वितयंपर्व तर्जन्या परमेश्वरि ॥ मेरुं जानीहि देवेशि ! तद्वयंनस्पृशेत्क्वचित् ॥ अष्टोत्तर जपे पर्व आद्यन्तद्वितयं त्यजेत् ॥ नित्यं जपं करे कुर्यात् नतुकाम्यं कदाच न ॥ काम्यमपि करे कुर्यान्माला भावे च मत्प्रिये ॥ अनुलोम विलोमेन सर्व मालासु संजपेत् । केवलश्चानुलोमेन प्रजपेत्करमालया ॥ सावित्रीं सर्वदा तु करमालया जपेत् ॥ वैष्णवे तुलसी माला गज-दन्तैर्गणेश्वरेः ॥ त्रिपुरा जपने शस्ता रुद्राक्षैरक्त चन्दनैः ॥ श्मशान धूस्तूर बीजैः शस्ताधूमावतीजपे । करपर्व समु-द्धृत्यनाड्यासंग्रंथिता सती ॥ प्रस्ताचवगलामुख्याः सत्यंसत्यंमहेश्वरि ॥ असंकल्पिते सत्यंयन्न्यूनाधिक मथापि वा ॥ नसम्यक्फलभाग्भूयात् तस्मान्नियममाचरेत् । ताम्रपात्रं सदूर्वञ्च सतिलंजल पूरितम् ॥ सकुशं सफलं देवि-गृहीत्वाचस्यकल्पतः अभ्यर्च्यचशिरः पद्मेश्रीगुरुं करुणामयम् ॥

आसनीयमाह गौरीयामले ।। सलिले यदि कुर्वीत देवतानां प्रपूजनम् । तथाप्यासन आसीनो नोत्थितश्च तथाचरेत् ।। आसनं कल्पयित्वातु, मनसा पूजयेज्जले । आसनस्थो जपेत्सम्यङ्मंत्रार्थ गतमानसः ।।सम्मोहनतन्त्रे ।। रक्तासनोप विष्टस्तु लाक्षारुणगृहे स्थितः ।। मनः कल्पित रक्तोवासाधकः स्थिर मानसः ।। कुशकम्बल वस्त्राणांसिंह व्याघ्रमृगाजिनम् ।। कौशेयंवाथ चार्मंवाचैलं तौल मथापिवा ।। शरपत्र तालपत्रं कम्बलं दर्भमासनम् ।। कृष्णाजिनेज्ञान सिद्धिर्मुक्तिः श्री व्याघ्र चर्मणि । कृष्णा जिने गृहस्थानांनाधिकारः । न दीक्षितो विशेज्ञातू कृष्णसारा जिनेगृही ।। विशेद्यतिर्वनस्थश्च ब्रह्मचारी तु भिक्षुकः । वस्त्रासने व्याधिनाशः कम्बले दुःखनाशनम् ।। जपध्यान तपोहानिर्वस्त्रासनं करोति यः ।। तत्रवस्त्र निषेधः केवलवस्त्रनिषेधः । अन्यथा विरोधापत्ते । कुशासनेभवेद्दायुर्मोक्षः स्याद्व्याघ्र चर्मणि ।। अजिनेचभवेत्पुत्री कम्बले सिद्धिरुत्तमो । शान्ति के धवलः प्रोक्तः सर्वार्थंचित्रकम्बले, स्यात्पौष्टिकेतु कौशेयं कम्बले दुःखमोचनं । नैतद्द्विहस्त तोदीर्घसार्द्ध हस्तान्नविस्तृतं । न अंगुलात्समुच्छ्रा यं पूजा कर्मणि संगृहे । आसनंचततः कुर्यान्नाति नीचंनचोच्छ्रितम् ।।

इति श्री लक्ष्मीनारायण गोस्वामिना संग्रहीता संध्याविधिः समाप्ता ॥

जप के बाद की ८ मुद्राओं के चित्र ।

१ सुरभिः

२ ज्ञान

३ वैराग्यं
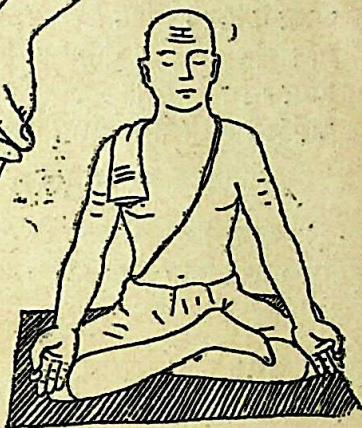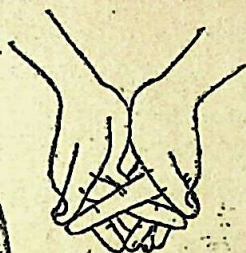
४ योनि
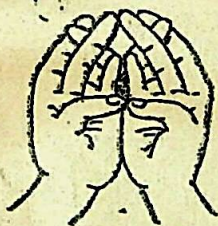
५ शंख

६ पंकजम्

७ लिङ्गम्
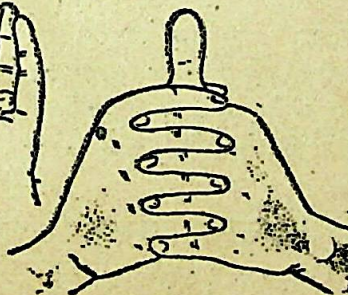
८ निर्वाण

दुर्गार्चन स्मृति ४७० पृष्ठ १५ तिरंगे चित्र तथा पूजन के २ यंत्र और सम्पूर्ण वेदोक्त तथा तंत्रोक्त पूजन सहित अतएव अनेक उपयोगी विषय सहित है जिसकी थोड़े समय में ही बीस हजार प्रति बंट गई हैं। तृतीय आवृत्ति छप रही है। विद्वानों को बिना मूल्य केवल ।=) आने पोस्टेज के लिये आने पर चैत्र और आश्विन में ही भेजी जाती है। हर समय नहीं मिलती है।

उपाकर्म पद्धति।

श्रावणी का अत्युत्तम विधान है। श्रावण मास में ही बिना मूल्य तथा बिना पोस्टेज से भेजी जाती है।

पञ्चरत्न गीता ॥

इसमें गीता के ऊपर सुंदर भाषा टीका हो गई है तथा और सब मूल है। मंगवाकर लाभ उठाइये।

संध्या विधिः ॥

कात्यायनीय तर्पणबलिवैश्वदेव तथा अन्य बहुत उपयोगी विषय सहित ५वीं वार दस हजार छपकर तय्यार है मंगवाइये।

पुस्तकें मंगाने का पता

बंशीधर प्रेमसुख दास

तेल मिल माईथान, आगरा।

शुभ सम्वाद।

जो कोई महानुभाव मंदिर, बाग, कुआ, बावड़ी, की प्रतिष्ठा तथा महामृत्युञ्जय, दुर्गा, रुद्राभिषेक तथा और कोई प्रयोग कराना चाहे नीचे लिखे पते पर परामर्श करें। उनका सब कार्य सुचारु रूप से संतोषप्रद करा दिया जायगा। तथा केवल हस्त रेखा से ही नष्ट पत्री वर्षफल सुख दुःख मूक प्रश्न भी बताया जाता है।

श्री लक्ष्मीनारायण गोस्वामी

३६७३ माईथान, आगरा।